खादी के फूल



श्री सुमित्रानंदन पंत

बच्चन

भारती भंडार, प्रयाग

ग्रंथ-संख्या—१३१
प्रकाशक तथा विक्रेता
भारती-भंडार
लीडर प्रेस, प्रयाग

प्रथम संस्करण
संवत् २००५
मूल्य ५)

मुद्रक
महादेव एन० जोशी
लीडर प्रेस, इलाहाबाद

प्राक्कथन

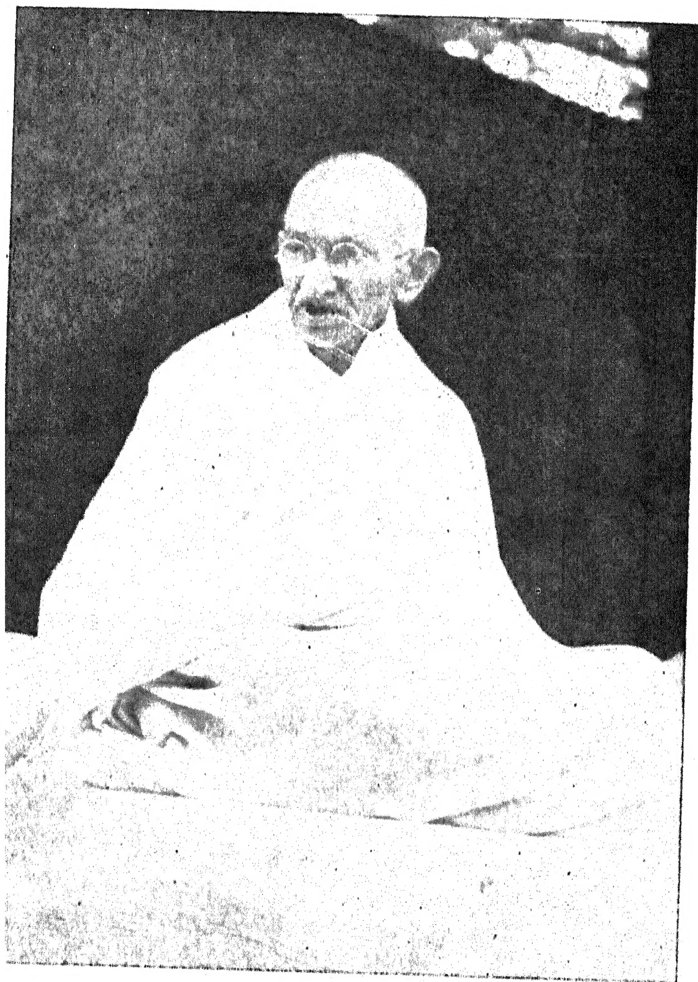
इस बार प्रयाग में बच्चन के साथ अपने दस मास के सहवास की स्मृति को स्थायित्व प्रदान करने के उद्देश्य से ही 'खादी के फूल' के नाम से, महात्मा जी को श्रद्धांजलि स्वरूप, अपनी और बच्चन की कविताओं का यह संयुक्त सग्रह् प्रकाशित कराने को मैं प्रेरित हुआ हूँ।

महात्मा जी के अश्रांत उद्योग से जहाँ हमें स्वाधीनता प्रात हुई है वहाँ उनके महान व्यक्तित्व से हमें गंभीर सांस्कृतिक प्रेरणा भी मिली है। महात्मा जी ने राजनीति के कर्दम में अहिंसा के वृत पर जिस सत्य को जन्म दिया है वह संस्कृति की देवी का ही आसन है। अतः बापू के उज्वल जीवन की पुण्यस्मृति से सुरभित इन खादी के फूलों को हम पाठकों को इस विनीत आशा से समर्पित कर रहे हैं कि हम खादी के स्वच्छ परिधान के भीतर गांधीवाद के संस्कृत हृदय को स्पंदित कर सकेंगे।

प्रयाग
मई, १९४८

श्री सुमित्रानंदन पंत

खादी के फूल—



(श्री मुनीश वैश्य के सौजन्य से प्राप्त)

राष्ट्र-पिता

के

चरणों में अर्पित

खादी के फूल

गीतों की प्रथम पंक्ति सूची

खादी के फूल

१

अंतर्धान हुआ फिर देव विचर धरती पर,
स्वर्ग रुधिर से मर्त्यलोक की रज को रँगकर !
टूट गया तारा, अंतिम आभा का दे वर,
जीर्ण जाति मन के खँडहर का अंधकार हर !

अंतर्मुख हो गई चेतना दिव्य अनामय
मानस लहरों पर शतदल सी हँस ज्योतिर्मय !
मनुजों में मिल गया आज मनुजों का मानव
चिर पुराण को बना आत्मबल से चिर अभिनव !

आओ, हम उसको श्रद्धांजलि दें देवोचित,
जीवन सुंदरता का घट मृत को कर अर्पित
मंगलप्रद हो देवमृत्यु यह हृदय विदारक
नव भारत हो बापू का चिर जीवित स्मारक !

बापू की चेतना बने पिक का नव कूजन,
बापू की चेतना वसंत बखेरे नूतन !

२

हाय, हिमालय ही पल में हो गया तिरोहित
ज्योतिर्मय जल से जन धरणी को कर प्लावित !
हाँ, हिमाद्रि ही तो उठ गया धरा से निश्चित
रजत वाष्प सा अंतर्नभ में हो अंतर्हित !

आत्मा का वह शिखर, चेतना मे लय क्षण में ,
व्याप्त हो गया सूक्ष्म चादनी सा जन मन में !
मानवता का मेरु, रजत किरणों से मण्डित ,
अभी अभी चलता था जो जग को कर विस्मित ,
लुप्त हो गया : लोक चेतना के क्षत पट पर
अपनी स्वर्गिक स्मृति की शाश्वत छाप छोड़कर !

आओ, उसकी अक्षय स्मृति को नींव बनाएँ ,
उसपर संस्कृति का लोकोत्तर भवन उठाएँ !
स्वर्ण शुभ्र धर सत्य कलश स्वर्गोच्च शिखर पर
विश्व प्रेम में खोल अहिंसा के गवाक्ष वर !

३

आज प्रार्थना से करते तृण तरु भर मर्मर,
सिमटा रहा चपल कूलों को निस्तल सागर!
नम्र नीलिमा मे नीरव, नभ करता चितन
श्वास रोक कर ध्यान मग्न सा हुआ समीरण!

क्या क्षण भंगुर तन के हो जाने से, ओझल
सूनेपन में समा गया यह सारा भूतल?
नाम रूप की सीमाओं से मोह मुक्त मन
या अरूप की ओर बढ़ाता स्वप्न के चरण?

ज्ञात नहीं: पर द्रवीभूत हो दुख का बादल
बरस रहा अब नव्य चेतना में हिम उज्वल,
बापू के आशीर्वाद सा ही: अतस्तल
सहसा है भर गया सौम्य आभा से शीतल!

खादी के उज्वल जीवन सौंदय पर सरल
भावी के सतरँग सपने कँप उठते झलमल!

४

हाय, आँसुओं के आँचल से ढँक नत आनन
तू विषाद की शिला, बन गई आज अचेतन,
ओ गांधी की धरे, नहीं क्या तू अकाय-व्रण ?
कौन शस्त्र से भेद सका तेरा अछेद्य तन ?

तू अमरों की जनी, मर्त्य भू में भी आकर
रही स्वर्ग से परिणीता, तप पूत निरंतर !
मंगल कलशों से तेरे वक्षोजों में घन
लहराता नित रहा चेतना का चिर यौवन !
कीर्ति स्तंभ से उठ तेरे कर अंबर पट पर
अंकित करते रहे अमिट ज्योतिर्मय अक्षर !

उठ, ओ गीता के अक्षय यौवन की प्रतिमा,
समा सकी कब धरा स्वर्ग में तेरी महिमा !
देख, और भी उच्च हुआ अब भाल हिम शिखर
बाँध रहा तेरे अंचल से भू को सागर !

५

हिम किरीटिनी, मौन आज तुम शीश झुकाए,
सौ वसंत हों कोमल अंगों पर कुम्हलाए!
वह जो गौरव शृंग धरा का था स्वर्गोज्वल,
टूट गया वह ?—हुआ अमरता मे निज ओझल!
लो, जीवन सौंदर्य ज्वार पर आता गांधी,
उसने फिर जन सागर मे आभा पुल बाँधी!

खोलो, मा, फिर बादल सी निज कबरी श्यामल,
जन मन के शिखरों पर चमके विद्युत के पल!
हृदय हार सुरधुनी तुम्हारी जीवन चंचल,
स्वर्ण श्रोणि पर शीश धरे सोया विंध्याचल!
गज रदनों से शुभ्र तुम्हारे जघनों में घन
प्राणों का उन्मादन जीवन करता नर्तन!

तुम अनंत यौवना धरा हो, स्वर्गाकांक्षित,
जन को जीवन शोभा दो : भू हो मनुजोचित!

६

देख रहे क्या देव, खड़े स्वर्गोच्च शिखर पर
लहराता नव भारत का जन जीवन सागर ?
द्रवित हो रहा जाति मनस का अंधकार घन
नव मनुष्यता के प्रभात में स्वर्णिम चेतन !

मध्ययुगों का घृणित दाय हो रहा पराजित,
जाति द्वेष, विश्वास अंध, औदास्य अपरिमित !
सामाजिकता के प्रति जन हो रहे जागरित
अति वैयक्तिकता में खोए, मूढ़ विभाजित !

देव, तुम्हारी पुण्य स्मृति बन ज्योति जागरण
नव्य राष्ट्र का आज कर रही लौह संगठन !
नव जीवन का रुधिर हृदय में भरता स्पंदन,
नव्य चेतना के स्वप्नों से विस्मित लोचन !

भारत की नारी ऊषा सी आज अगुंठित,
भारत की मानवता नव आभा से मंडित !

७

देख रहा हूँ, शुभ्र चाँदनी का सा निर्झर
गाधी युग अवतरित हो रहा इस धरती पर!
विगत युगों के तोरण, गुबद, मीनारों पर
नव प्रकाश की शोभा रेखा का जादू भर!

संजीवन पा जाग उठा फिर राष्ट्र का मरण,
छायाएँ सी आज चल रही भू पर चेतन,—
जन मन मे जग, दीप शिखा के पग धर नूतन
भावी के नव स्वप्न धरा पर करते विचरण!

सत्य अहिसा बन अंतर्राष्ट्रीय जागरण
मानवीय स्पर्शो से भरते है भू के व्रण!
झुका तड़ित-अणु के अश्वो को, कर आरोहण,
नव मानवता करती गांधी का जय घोषण!

मानव के अतरतम शुभ्र तुषार के शिखर
नव्य चेतना मडित, स्वर्णिम उठे है निखर!



देव पुत्र था निश्चय वह जन मोहन मोहन,
सत्य चरण धर जो पवित्र कर गया धरा कण !
विचरण करते थे उसके सँग विविध युग वरद
राम, कृष्ण, चैतन्य, मसीहा, बुद्ध, मुहम्मद !

उसका जीवन मुक्त रहस्य कला का प्रांगण,
उसका निश्छल हास्य स्वर्ग का था वातायन !
उसके उच्चादर्शों से दीपित अब जन मन,
उसका जीवन स्वप्न राष्ट्र का बना जागरण !

विश्व सभ्यता की कृत्रिमता से हो पीडित
वह जीवन सारल्य कर गया जन में जागृत !
यांत्रिकता के विषम भार से जर्जर भू पर
मानव का सौंदर्य प्रतिष्ठित कर देवोत्तर !

आत्म दान से लोक सत्य को दे नव जीवन
नव सस्कृति की शिला रख गया भूपर चेतन !

६

दव, अवतरण करो धरा-मन में क्षण, अनुक्षण,
नव भारत के नव जीवन बन, नव मानवपन !
जाति ऐक्य के ध्रुव प्रतीक, जग वंद्य महात्मन्,
हिंदू मुस्लिम बढ़ें तुम्हारे युगल चरण बन !

भावी कहती कानों में भर गोपन मर्मर,—
हिंदू मुस्लिम नही रहेंगे भारत के नर !
मानव होंगे वे, नव मानवता से मंडित,
मध्य युगों की कारा से भू पर चल विस्तृत !

जाति द्वेष से मुक्त, मनुजता के प्रति जीवित,
विकसित होंगे वे, उच्चादर्शों से प्रेरित !
भू जीवन निर्माण करेंगे, शिक्षित जन मत,
बापू में हो युक्त, युक्त हो जग से युगपत् !

नव युग के चेतना ज्वार में कर अवगाहन
नव मन, नव जीवन-सौंदर्य करेंगे धारण !

१०

दर्प दीप्त मनु पुत्र, देव, कहता तुमको युग मानव,
नही जानता वह, यह मानव मन का आत्म पराभव !
नही जानता, मन का युग मानव आत्मा का शैशव,
नहीं जानता मनु का सुत निज अंतर्नभ का वैभव !

जिन स्वर्गिक शिखरों पर करते रहे देव नित विचरण,
जिस शाश्वत मुख के प्रकाश से भरते रहे दिशा क्षण,
आज अपरिचित उससे जन, ओढ़े प्राणों का जीवन,
मन की लघु डगरो में भटके, तन को किए समर्पण !

वे मिट्टी-से आज दबाए मुँह में ममता के तृण
नहीं जानते वे, रज की काया पर देवों का ऋण !
ज्योति चिह्न जो छोड़ गए जन मन में बुद्ध महात्मन्
वे मानव की भावी के उज्वल पथ दर्शक नूतन !

मनोयन्त्र कर रहा चेतना का नव जीवन ग्रंथित,
लोकोत्तर के सँग देवोत्तर मनुज हो रहा विकसित !

११

प्रथम अहिंसक मानव बन तुम आए हिंस्र धरा पर,
मनुज बुद्धि को मनुज हृदय के स्पर्शों से संस्कृत कर!
निबल प्रेम को भाव गगन से निर्मम धरती पर धर
जन जीवन के बाहु पाश में बाँध गए तुम दृढतर!
द्वेष घृणा के कटु प्रहार सह, करुणा दे प्रेमोत्तर
मनुज अहं के गत विधान को बदल गए, हिंसा हर!

घृणा द्वेष मानव उर के संस्कार नहीं है मौलिक,
वे स्थितियों की सीमाएँ है : जन होंगे भौगौलिक!
आत्मा का संचरण प्रेम होगा जन मन के अभिमुख,
हृदय ज्योति से मंडित होगा हिंसा स्पर्धा का मुख!

लोक अभीप्सा के प्रतीक, नव स्वर्ग मर्त्य के परिणय,
अग्रदूत बन भव्य युग पुरुष के आए तुम निश्चय!
ईश्वर को दे रहा जन्म युग मानव का संघर्षण,
मनुज प्रेम के ईश्वर, तुम यह सत्य कर गए घोषण!

१२

सूर्य किरण सतरंगों की श्री करतीं वर्षण
सौ रंगों का सम्मोहन कर गए तुम सृजन,—
रत्नच्छाया सा, रहस्य शोभा से गुंफित,
स्वर्गोन्मुख सौंदर्य प्रेम आनंद से श्वसित!

स्वप्नों का चंद्रातप तुम बुन गए, कलाधर,
विहँस कल्पना नभ से, भाव-जलद-पर रँगकर,
रहस प्रेरणा की तारक ज्वाला से स्पंदित
विश्व चेतना सागर को कर रंग ज्वार स्मित!

प्राण शक्ति के तड़ित मेघ से मंद्र भर स्तनित
जन भू को कर गए अग्नि बीजों से गर्भित,
तुम अखंड रस पावस का जीवन प्लावन भर
जगती को कर अजर हृदय यौवन से उर्वर!

आज स्वप्न पथ से आते तुम मौन धर चरण,
बापू के गुरुदेव, देखने राष्ट्र जागरण!

१२

राजकीय गौरव से जाता आज तुम्हारा अस्थि फूल रथ,
श्रद्धा मौन असंख्य दृगों से अंतिम दर्शन करता जन पथ!
हृदय स्तब्ध रह जाता क्षण भर, सागर को पी गया ताम्र घट?
घट घट में तुम समा गए, कहता विवेक फिर, हटा तिमिर पट!
बाँध रही गीले आँचल में गंगा पावन फूल ससंभ्रम,
भूत भूत में मिलें, प्रकृति क्रम : रहे तुम्हारे सँग न देह भ्रम!

अमर तुम्हारी आत्मा, चलती कोटि चरण धर जन में नूतन,
कोटि नयन नवयुग तोरण बन, मन ही मन करते अभिनंदन!
भूल क्षणिक भस्मांत स्वप्न यह, कोटि कोटि उर करते अनुभव
बापू नित्य रहेंगे जीवित भारत के जीवन में अभिनव!

आत्मज होते महापुरुष : वे अगणित तन कर लेते धारण,
मृत्यु द्वार कर पार, पुनर्जीवित हो, भू पर करते विचरण!
राजोचित सम्मान तुम्हें देता, युग सारथि, जन मन का रथ,
नव आत्मा बन उसे चलाओ, ज्योतित हो भावी जीवन पथ!

१४

लो, झरता रक्त प्रकाश आज नीले बादल के अंचल से,
रँग रँग के उड़ते सूक्ष्म वाष्प मानस के रश्मि ज्वलित जल से !
प्राणों के सिंधु हरित पट से लिपटी हँस सोने की ज्वाला,
स्वप्नों की सुषमा में सहसा निखरा अवचेतन अँधियाला !

आभा रेखाओं के उठते गृह, धाम, अट्ट, नवयुग तोरण,
रुपहले परों की अप्सरियाँ करतीं स्मित भाव सुमन वर्षण !
दिव्यात्मा पहुँची स्वर्गलोक, कर काल अश्व पर आरोहण,
अंतर्मन का चैतन्य जगत करता बापू का अभिनंदन !

नव संस्कृति की चेतना शिला का न्यास हुआ अब भू-मन में,
नव लोक सत्य का विश्व संचरण हुआ प्रतिष्ठित जीवन में !
गत जाति धर्म के भेद हुए भावी मानवता में चिर लय,
विद्वेष घृणा का सामूहिक नव हुआ अहिंसा से परिचय !

तुम धन्य युगों के हिंसक पशु को बना गए मानव विकसित,
तुम शुभ्र पुरुष बन आए, करने स्वर्ण पुरुष का पथ विस्तृत !

१५

बारबार अंतिम प्रणाम करता तुमको मन
हे भारत की आत्मा, तुम कब थे भंगुर तन?
व्याप्त हो गए जन मन में तुम आज महात्मन्
नव प्रकाश बन, आलोकित कर नव जग-जीवन!
पार कर चुके थे निश्चय तुम जन्म औ' निधन
इसीलिए बन सके आज तुम दिव्य जागरण!
श्रद्धानत अंतिम प्रणाम करता तुमको मन
हे भारत की आत्मा, नव जीवन के जीवन!

१६

हो गया क्या देश के
सबसे सुनहले दीप का
निर्वाण !

(१)

वह जगा क्या जगमगाया देश का
तम से घिरा प्रासाद,
वह जगा क्या था जहाँ अवसाद छाया,
छा गया आह्लाद,
वह जगा क्या बिछ गई आशा किरण
की चेतना सब ओर,
वह जगा क्या स्वप्न से सूने हृदय-
मन हो गए आबाद

वह जगा क्या ऊर्ध्व उन्नति-पथ हुआ
आलोक का आधार,

वह जगा क्या मानवों का स्वर्ग ने
उठकर किया आह्वान,

हो गया क्या देश के
सबसे सुनहले दीप का
निर्वाण !

(२)

वह जला क्या जग उठी इस जाति की
सोई हुई तक़दीर,
वह जला क्या दासता की गल गई
बंधन बनी ज़ंजीर,
वह जला क्या जग उठी आज़ाद होने
की लगन मजबूत,
वह जला क्या हो गइ बेकार कारा-
गार की प्राचीर,

वह जला क्या विश्व ने देखा हमे
आश्चर्य से दृग खोल,

वह जला क्या मर्दितों ने क्राति की
देखी ध्वजा अम्लान,

हो गया क्या देश के
सबसे दमकते दीप का
निर्वाण !

(३)

वह हँसा तो मृत मरुस्थल में चला
मधुमास-जीवन-श्वास,
वह हँसा तो क़ौम के रौशन भविष्यत
का हुआ विश्वास
वह हँसा तो जड़ उमंगों ने किया
फिर से नया शृंगार,
वह हँसा तो हँस पड़ा इस देश का
रूठा हुआ इतिहास,

वह हँसा तो रह गया संदेह-शंका
को न कोई ठौर,

वह हँसा तो हिचकिचाहट-भीति-भ्रम का
हो गया अवसान,

हो गया क्या देश के
सबसे चमकते दीप का
निर्वाण !

(४)

वह उठा तो एक लौ में बंद होकर
आ गई ज्यों भोर,
वह उठा तो उठ गई सब देश भर की
आँख उसकी ओर,
वह उठा तो उठ पड़ी सदियाँ विगत
अँगड़ाइयाँ ले साथ,
वह उठा तो उठ पड़े युग-युग दबे
दुखिया, दलित, कमज़ोर,

वह उठा तो उठ पड़ी उत्साह की
लहरें दृगों के बीच,

वह उठा तो झुक गए अन्याय,
अत्याचार के अभिमान,

हो गया क्या देश के
सबसे प्रभामय दीप का
निर्वाण !

(५)

वह न चाँदी का, न सोने का न कोई
धातु का अनमोल,
थी चढ़ी उसपर न हीरे और मोती
की सजीली खोल,
मृत्तिका की एक मुट्ठी थी कि उपमा
सादगी थी आप,
किन्तु उसका मान सारा स्वर्ग सकता
था कभी क्या तोल?

ताज शाहों के अगर उसने झुकाए
तो तअज्जुब कौन,

कर सका वह निम्नतम, कुचले हुओं का
उच्चतम उत्थान,

हो गया क्या देश के
सबसे मनस्वी दीप का
निर्वाण!

(६)

वह चमकता था, मगर था कब लिए
तलवार पानीदार,
वह दमकता था मगर अज्ञात थे
उसको सदा हथियार,
एक अंजलि स्नेह की थी तरलता में
स्नेह के अनुरूप,
किंतु उसकी धार में था डूब सकता
देश क्या, संसार;

स्नेह में डूबे हुए ही तो हिफ़ाज़त
से पहुँचते पार,

स्नेह में जलते हुए ही कर सके हैं
ज्योति-जीवनदान,

हो गया क्या देश के
सबसे तपस्वी दीप का
निर्वाण !

(७)

स्नेह में डूबा हुआ था हाथ में
कातो रुई का सूत,
थी बिखरती देश भर के घर-डगर में
एक आभा पूत,
रोशनी सब के लिए थी, एक को भी
थी नहीं अंगार,
फ़र्क़ अपने औ' पराए में न समझा
शांति का यह दूत,

चाँद-सूरज से प्रकाशित एक से हैं
झोपड़ी-प्रासाद,

एक-सी सब को विभा देते जलाने
जो कि अपने प्राण,

हो गया क्या देश के
सबसे यशस्वी दीप का
निर्वाण !

(८)

ज्योति में उसकी हुए हम एक यात्रा
के लिए तैयार,
कीं उसी के आसरे हमने तिमिर-गिरि
घाटियाँ भी पार,
हम थके माँदे कभी बैठे, कभी
पीछे चले भी लौट,
किंतु वह बढ़ता रहा आगे सदा
साहस बना साकार,

आँधियाँ आईं, घटा छाईं, गिरा
भी वज्र बारंबार,

पर लगाता वह सदा था एक—
अभ्युत्थान! अभ्युत्थान!

हो गया क्या देश के
सबसे अचंचल दीप का
निर्वाण!

(९)

लक्ष्य उसका था नहीं कर दे महज़
इस देश को आजाद,
चाहता वह था कि दुनिया आज की
नाशाद हो फिर शाद,
नाचता उसके दृगों में था नए
मानव-जगत का ख्वाब,
कर गया उसको अचानक कौन औ'
किस वास्ते बर्बाद,

बुझ गया वह दीप जिसकी थी नहीं
जीवन-कहानी पूर्ण,

वह अधूरी क्या रही, इंसानियत का
रुक गया आख्यान।

हो गया क्या देश के
सबसे प्रगतिमय दीप का
निर्वाण !

(१०)

विष घृणा से देश का वातावरण
पहले हुआ सविकार,
ख़ून की नदियाँ बही, फिर बस्तियाँ
जलकर गईं हो क्षार,
जो दिखाता था अँधेरे में प्रलय के
प्यार की ही राह,
बच न पाया, हाय, वह भी इस घृणा का
क्रूर, निद्य प्रहार,

सौ समस्याएँ खड़ी है, एक का भी
हल नही है पास,

क्या गया है रूठ प्यारे देश भारत-
वर्ष से भगवान !

हो गया क्या देश के
सबसे ज़रूरी दीप का
निर्वाण !

१७

ओ राष्ट्र महाकवि, राष्ट्रनाद, मैथिलीशरण,
हो गया राष्ट्र के पुण्य पिता का महामरण,
होकर अनाथ यह आर्त्त जाति माँगती शरण,
कुछ कहो, देवता, दैन्य-शोक-संताप-हरण।

तुम कहाँ छिपे हो युगप्रवर्त्तक सूर्यकांत,
युग-पुरुष लुप्त हो गया, तिमिर छाया नितांत,
संपूर्ण देश हो रहा आज दिग्भ्रांत, क्लांत,
बिखराओ अपने प्रखर स्वरों की शीघ्र कांति।

मत रहो मौन यों, बहन महादेवी, बोलो,
कुछ तो रहस्य इस दुर्घट घटना का खोलो,
ओ नीर-भरी बदली, क्यो उमड नहीं आती,
क्या रक्त-सनी रह जाएगी मा की छाती?

उठ 'दिनकर', भारत का दिनकर हो गया अस्त,
शृंगार देश का क्षार-धूम्र मे ग्रस्त-ध्वस्त;
वाणी के उदयाचल से ऐसी छेड़ तान,
तम का मसान हो नई रोशनी का निशान।

तू कहाँ आज भाई शिवमंगल सिंह 'सुमन',
है खड़ा हो गया वक्त आज बनकर दुश्मन,
वाणी में भरकर व्रम्हचर्य हो जा तयार,
कर चुका नहीं है अभी शत्रु अंतिम प्रहार।

तुमसे मेरी प्रार्थना, सुमित्रानन्द(न) पंत ,
संतों में सुमधुर कवि, कवियों मे सौम्य संत
आ पड़ी देश पर, बंधु, आपदा यह दुरंत—
टूटे सत्यं, शिव, सुदरता के तंतु-तंतु।
माने क्या है जो हुआ देश पर यह अनर्थ ,
बोलो वाणी के पुत्रों में सबसे समर्थ ,
वंदित वीणा पर गाकर अपना ज्ञान-गान
सुस्थिर कर दो भारतमाता के विकल प्राण ,
ले करामलकवत् भूत, भविष्यत, वर्त्तमान ,
ओ कविर्मनीषी, करो विश्व का समाधान।

१८

तुम पिए पड़े हो कहाँ, 'शायरे इन्क़लाब',
देखो, जो भारत के सिर के ऊपर अज़ाब,
गांधी की हत्या, जोश, बात कितनी अजीब,
अब करो होश, हिंदोस्तान के तुम नक़ीब।

तुम किस फ़िराक़ में पड़े हुए रघुपति सहाय,
बापू के उठने से है भारत नि:सहाय,
शबनमिस्तान के मोती पर मत हो निसार,
हिंदोस्तान के आँसू भी करते पुकार।

हज़रते 'मोहानी' भारत के सबसे महान
नेता का फिरक़ेबंदी ने ले लिया प्राण,
तुम अब भी इसके घेरे से बाहर आओ,
अपने यौवन का क्रांतिपूर्ण स्वर दुहराओ।

ओ 'जिगर', देश का जिगर गोलियों का शिकार,
छाया है तुमपर अब भी जामों का ख़ुमार,
ख़्वाबी ख़ुशियों में मुल्क-मुसीबत मत भूलो,
गिरती क़ौमों के शायर ही दारोमदार।

'साग़र', अब संत तुम्हारा गांधी चला गया,
वह नफ़रत के कालिया नाग से छला गया
इस दो मुँह-जिह्वा के ज़हरीले कीरे को
कीलो कोई जादू का गाकर गीत नया।

सर्दार जाफ़री, जाति आज सर्दार हीन,
भारत माता का चेहरा मातम से मलीन,
इंसानों में से इंसानियत मिटाने को
तैयार आज हिंदू-मुस्लिम के धर्म-दीन।
तेरी जबान में ताक़त है, दिल है दिलेर,
है जानदार तेरी कविता का शेर-शेर,
उठ अपना रोशन क़लम उठा, मत लगा देर,
मुल्की सियाहपन को करना है हमें ज़ेर।
है हमें बनाना नया एक हिंदोस्तान,
हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई जिसमें समान।

१६

इस शामेवतन में इतना गहरा अंधकार,
बेताब लग रहा सुब्हेवतन का इंतज़ार,
'चकबस्त' याद आते हैं मुझको बारबार,
अक्सर दिमाग़ में फिरते हैं उनके अशआर—

"सदा यह आती है फल, फूल और पत्थर से,
ज़मी पे ताज गिरा क़ौमे हिंद के सर से।

तुझी को मुल्क मे रोशन दिमाग समझे थे,
तुझे ग़रीब के घर का चिराग़ समझे थे।

जो आज नश्वोनुमा का नया ज़माना है,
यह इन्क़लाब तेरी उम्र का फ़साना है।

वतन की जान पे क्या-क्या तबाहियाँ आईं,
उमँड-उमँड के जहालत की बदलियाँ आईं,
चिराग़ अम्न बुझाने को आँधियाँ आईं,
दिलों मे आग लगाने को बिजलियाँ आईं।
इस इंतशार मे जिस नूर का सहारा था,
उफ़क़ पे क़ौम की वह एक ही सितारा था।

हदीसे-क़ौम बनी थी तेरी जबाँ के लिए,
ज़बाँ मिली थी मुहब्बत की दासताँ के लिए,
ख़ुदा ने तुझको पयंबर किया यहाँ के लिए,
कि तेरे हाथ में नाक़ूस था अज़ाँ के लिए।

ख़ुदा के हुक्म से जब आबो-गिल बना तेरा,
किसी शहीद की मिट्टी से दिल बना तेरा,
जनाज़ा हिंद का दर से तेरे निकलता है,
सुहाग क़ौम का तेरी चिता में जलता है।

अजल के दाम में आना है यों तो आलम को,
मगर यह दिल नहीं तैयार तेरे मातम को,
पहाड़ कहते हैं दुनिया में ऐसे ही ग़म को,
मिटा के तुझको अजल ने मिटा दिया हमको।

तेरे अलम में हम इस तरह जान खोते हैं,
कि जैसे बाप से छुटकर यतीम रोते हैं।

ग़रीब हिंद ने तनहा नहीं यह दाग़ सहा,
वतन से दूर भी तूफ़ान रंजोग़म का उठा

रहेगा रंज ज़माने में यादगार तेरा,
वह कौन दिल है कि जिसमें नहीं मज़ार तेरा,

जो कल रक़ीब था वह आज सोगवार तेरा,
ख़ुदा के सामने है मुल्क शर्मसार तेरा।"

ग़मभरी नज़्म यह बारबार मै पढ़ता हूँ,
जब-जब पढ़ता हूँ, अपने मन में कहता हूँ—
गोखले-निधन पर लिखे गए यह बंद अमर
लागू होते है बापू पर अक्षर-अक्षर

बापू ने उनको अपना गुरू बनाया था,
जो गुण-गौरव उनके जीवन में पाया था,
बापू ने तप से उनकी सीमा चरम छुई,
जो कही गुरू पर गई. शिष्य पर बैठ गई।

दृष्टा तुम थे, 'चकबस्त', नहीं केवल शायर,
दे गए उसे तुम तीस बरस पहले ही स्वर,
जो महा आपदा हिंद देश पर आनी थी
सच कह दो, तुमको क्या यह घटना जानी थी ?

भारत-परस्त मौजूद आज यदि तुम होते,
होशोहवास ऐसे न हिंद के गुम होते,
हस्तियाँ कहाँ अब ऐसी जो सुन पाती है,
मरने पर जो आवाज़ चिता से आती है

तुम आज अगर होते——होना भी था मुमकिन ,
तुम यौवन में ही महाकाल से हुए उऋण ,
यह सदमा खाया देश बडा धीरज पाता ,
यह आज तुम्हारे मरने पर भी पछताता !

२०

ओ सरोजिनी वह तेरी ओजभरी वाणी,
हिंदोस्तान की आवाज़ों की पटरानी,
    हो गया निछावर एक जमाना था जिसके
तेवर, मिठास, अंदाज, साज पर लासानी,
जिसने भारत की सोने की ड्योढ़ी पर से
आशा-उमग का नया तराना गाया था
जिसने सदियों से सोए युवक-युवतियो को
किरणों के आँगन मे हँसना सिखलाया था
जिसमे था भारत ने पिछला जौहर खोला,
जिसमे था आनेवाला दिन-सपना बोला,
    जिसमें मदिरा का मतवालापन तो था ही,
तूने जिसमे था दिल का अमृत भी घोला।

ओ सरोजिनी, वह तेरी ओज भरी वाणी,
खो गई कहाँ है आज, बता तो, कल्याणी,
चल बसा अचानक तेरे गुलशन का माली,
रोता पत्ता-पत्ता, रोती डाली-डाली,
मलयानिल भी अब सायँ-सायँ -सा करता है,
जैसे इस गम में वह भी आहें भरता है,
तू ही क्यों चुप है, बतला तो, कोकिलबयने,
माना हमने, तेरे तो टूट गए डैने,
लेकिन कवि तो दुख में भी गाता जाता है,
क्या याद नही है शेली जो बतलाता है—
जिन गीतों में शायर अपना ग़म रोते है,
वे उनके सबसे मीठे नग़मे होते हैं।

इससे बढ़कर क्या ग़म भारत पर आएगा,
तू मौन रहेगी तो फिर कौन बताएगा,
बर्दाश्त किया क्या मा भारत की छाती ने,
सिर झुका दिया कितना उसका आघाती ने,
किस पछतावे की ज्वाला उसे जलाती है,
कैसे वह अपने मन को धीर बँधाती है
ओ सरोजिनी, यदि आज नही तू गाएगी,
भारत के दिल की दिल में ही रह जाएगी।

बुलबुले वक्त, है हमको अब भी इतज़ार,
जो हुआ देश के मधुबन पर वज्रप्रहार
उससे तेरे दिल में जागेगी एक आग,
संसार सुनेगा पीड़ा का अनमोल राग,
तेरे सफ़ेद बालों पर जाती है आँखें
लेकिन ये उनसे ज़रा नही घबराती है,
है कहा किसी ने, जब शायर बूढ़ा होता,
उसकी कविता तब नौजदान हो जाती है।

२१

यदि होते बीच हमारे श्री गुरुदेव आज,
देखते, हाय, जो गिरी देश पर महा गाज,
होता विदीर्ण उनका अंतस्तल तो ज़रूर,
यह महा वेदन
किंतु प्राप्त
करता वाणी।

हो नहीं रहा है व्यक्त आज मन का उबाल,
शब्दों के मुख से जीभ किसी ने ली निकाल,
किस मूल केंद्र को बेधा तूने, समय क्रूर,
घावों को धोने
को अलभ्य
दृग का पानी।

होते कवींद्र इन काली घड़ियों के त्राता,
होते रवींद्र तो मातम का तम कट जाता,
सत्यं, शिवं, सुंदर फिर से थापित हो पाता,
मरहम-सा बनकर देश-काल को सहलाता।
जो कहते वे
गायक-नायक
ज्ञानी-ध्यानी।

२२

'इक़बाल' क़ब्र के अंदर सोते मौन आज,
मर्सिया क़ौम का गा सकता है कौन आज,
फ़िरक़ेबंदी के प्रोत्साहक वे थे अवश्य,
परिणाम देखकर
शायद आज
बदल जाते।

हिंदोस्तान पर उनका एक तराना था,
है देश-प्रेम क्या? हमने उससे जाना था,
बुलबुलें गुलिस्ताँ मे जैसे गाती, उसको
हम गाते-गाते
हो जाते थे
मदमाते।

आवाज़ देश के कोने-कोने में जाती,
प्रतिध्वनित उसे करती हर जिह्वा, हर छाती,
सदमा पहुँचे हृदयों को ढाढस बँधवाती,
वह संगदिलों को भी अंदर से पिघलाती,
बापू के मरने पर जो हमें दबाए है,
उस महा व्यथा को
यदि वे वाणी
दे पाते।

२३

भारत पर आकर टूटी है क्या आधि-व्याधि
अरविंद, आज देखो तजकर अपनी समाधि,
गांधी को हमसे छीन ले गया महा व्याध,
हम खड़े विश्व
क आगे हो
निर्धन-अनाथ।

पाया रवींद्र ने भारत का हृदयस्पंदन,
गांधी ने, उसके हाथों का कर्मठ जीवन,
तुमने, उसका विज्ञान-योग, मानस-चिंतन,
तुम तीनों को
पा किया देश ने
उच्च माथ।

गुरुदेव बहुत पहले ही थे मुँह गए मोड़
बापू भी अपना नाता हमसे गए तोड़
वे, हाय, भरोसे किसके हमको गए छोड़
रक्खो स्वदेश पर
स्वामिन् अपना
वरद हाथ।

२४

रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित - पावन सीताराम!

युग के सबसे बड़े पुरुष को
सबसे छोटे ने मारा,
सबसे खोटे ने मारा,
दिल्ली ही क्या, भारत ही क्या, सारी दुनिया में कुहराम!
रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित - पावन सीताराम!

मानवता को जीवित रखना
था जिसका जीवन सारा,
दानवता के प्रतिनिधि द्वारा उसका हो ऐसा अंजाम
रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित - पावन सीताराम!

भारत की क़िस्मत का टूटा
सब से तेजोज्वल तारा,
हाय-हाय, हतभागा दिन यह, हाय-हाय, हतभागी शाम।
रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित - पावन सीताराम!

२५

हो गया गर्व भारत माता का आज चूर,
कल कटा देश, चल बसा देश का आज नूर,
नक्षत्र बुरे कुछ इस धरती के आए हैं,
अब भी इसपर
विपदा के बादल
छाए हैं।

जो मरे-कटे वे कैसे वापस आ सकते,
हल, चलो, मिला तुमको इस आफ़त का सस्ते,
घर-बार-द्वार से लेकिन लाखों उखड़ गए,
जो बसे हुए थे
सदियों से वे
उजड़ गए।

तलवार झूलती काश्मीर की क़िस्मत पर,
हैदराबाद बारूद बिछाने मे तत्पर,
नताओं मे आपस के झगड़े ठने हुए,
संयोग बुरे दिन
के है सारे
बने हुए।

जो सौ रुकावटें रहते पंथ बनाता था,
घन अंधकार में भी मशाल दिखलाता था,
उसको हमने अपने हाथो बलि चढ़ा दिया,
हमने ख़ुद अपने
मिटने का
सामान किया।

२६

इस महा विपद में व्याकुल हो मत शीश धुनो
अरविंद संत के, धर अंतर में धीर सुनो
यह महा वचन विश्वास और आशादायी—
दृढ़ खड़े रहो
चाह जितना हो
अंधकार।

है रही दिखाती तुम्हें मार्ग जो वर्षों से
जो तुम्हें बचा लाई है सौ संघर्षों से,
वह ज्योति, भले ही नेता आज धराशायी,
है ऊर्ध्वमुखी
वह नहीं सकेगी
कभी हार।

मिथ्यांध मोह-मत्सर को जीतेगा विवेक
यह खंडित भारतवर्ष बनेगा पुनः एक,
इस महा भूमि का निश्चय है भाग्याभिषेक,
मा पुनः करेगी
सब पुत्रों का
समाहार!

२७

कल्मष-कलुष-धँसी धरती पर
एक विभा का आसन ध्वस्त,
महा निराशा अंधकार में,
हाय, हुआ सब अग-जग लय,
तमसो मा ज्योतिगमय !

हाड़ - मांस - मज्जा - लोहू में
बापू थे क्या निहित समस्त,
नहीं बने थे क्या वे उन
तत्त्वों से जो अव्यय-अक्षय,
असदो मा सद्गमय !

हुई चिता के अस्ताचल पर
बापू की मृत काया अस्त,
केवल उनकी छाया अस्त,
नई ज्योति से, नए क्षितिज पर
आत्मा का नक्षत्र उदय !
मृत्योर्मा अमृतंगमय !

२८

भारतमाता का सबसे प्यारा बड़ा पूत
हो गया एक के पागलपन से पराभूत,
हो गया एक के क्रुद्ध तमंचे का शिकार,
यह तो निरभ्र
नभ-मंडल से
है वज्रपात।

वह एक नहीं, वह सदियों का है अंधकार
जिससे बापू हमको लाए मर-पच उबार,
अंतिम प्रयत्न यह उसका, छाए दुर्निवार
इस तम को मरना।
था, यदि होना
था प्रभात।

वह थे भविष्य भारत के दुर्जय प्रभ प्रतीक--
यदि कवि के मन मे इस घटना का अर्थ ठीक--
कर लिया आज, उनपर कर गोली से प्रहार,
दकियानूसी
हिंदोस्तान ने
आत्मघात।

२६

जब वर्षों हमने खून-पसीना एक किया,
तब भारत के जीवन में ऐसा दिन आया,
हम आज़ादी के मंदिर का निर्माण करें,
थापे उसमें
आज़ादी की
प्रतिमा सुंदर

मंदिर का भव्य, विशाल, मनोहारी नक्शा,
था नाच रहा सपने-सा सब की आँखों में,
साकार उसे करने को सत्य धरातल पर
संपूर्ण जाति
बस होने को ही
थी तत्पर।

लेकिन कैसे देवता हमारे रूठ गए
अब हम इन थोथे नक़्शों को लेकर चाटें,
जो मूर्ति प्रतिष्ठित होने को थी मंदिर में,
वह पड़ी हुई है
लो, टुकड़े-टुकड़
होकर!

३०

यह गांधी मरकर पड़ा नहीं है धरती पर,
यह उसकी काया—काया होती है नश्वर,
गांधी संज्ञा वह जो है जग मे अजर-अमर,
दी उसने केवल
जीवन क
चादर उतार।

सुर, नर, मुनि इसको अपने तन पर लेते हैं,
दुनिया ही ऐसी है—मैली कर देते हैं,
कुछ ओढ़ जतन से ज्यों की त्यों धर देते हैं,
दी उसे तपोधन
गांधी ने तप
से सँवार।

मरना जीवन की एक बड़ी लाचारी है,
उसके आगे खिल्क़त ने मानी हारी है,
बापू का मरना जीने की तैयारी है,
बापू का मरना
सौ जीने से
जोरदार।

३१

वे तो भारतमाता की पावन वेदी पर,
कर चुके बहुत पहले थे तन-मन न्योछावर,
उनको मरने का ख़ौफ़ नहीं था राई भर,
उनको ममता का
लेश नहीं था
जीने पर।

बामतलब था उनका हर काम ज़माने में,
विश्वास नहीं वे रखते थे दिखलाने में,
कुछ अर्थ छिपा था उनके गोली खाने में,
क्या क्रोध करें
हम नाथूराम
कमीने पर।

नंगे भारत के लिए बने नंगे फ़क़ीर,
भूखे भारत के लिए सुखा डाला शरीर,
पीड़ित भारत की सही हृदय में मर्म पीर,
घायल भारत के
घाव भी लिए
सीने पर।

३२

जो गोली खाकर गिरी, मरी, वह थी छाया,
है अजर-अमर उसके आदर्शों की काया,
भारत ने जिनको युग-युग तपकर उपजाया,
थे हाड़ मांस
के व्यक्ति नहीं
बाबा गांधी।

जो पकड़ गया है वह तो है केवल छाया,
कितने दिल मे षड्यंत्री ने आश्रय पाया,
कितने कुत्सित भावों ने उसको दी काया,
वह एक नही है
इस पातक का
अपराधी।

मन के अंदर बिठलाकर नफ़रत के मूज़ी
की प्रतिमा, अपने से पूछो कितनी पूजी?
जिस भव्य भावना के प्रतीक थे बापू जी,
तुमने कितनी
वह अपने जीवन
में साधी?

३३

जिसने युग-युग से दबे हुओं को दी आशा,
जिसने गूँगों को दी अधिकारों की भाषा,
जिसने दीनों में छिपी दिव्यता दिखलाई,
जिसने भारत की
फूटी क़िस्मत
दी सँवार;

जिसने मुर्दों में प्राणों का संचार किया,
जिसने जनता के हाथों वह हथियार दिया,
जिसके आगे साम्राज्यों ने मुँह की खाई,
जिसने सदियों की
लदी ग़ुलामी
दी उतार;

—गोली जो हो जाए छाती के आर-पार,
—गोली जो करे प्रवाहित जीवन-रक्तधार,
—गोली जो कर दे टुकड़े-टुकड़े श्वास-तार,
एहसानमंद
भारत का उसको
पुरस्कार !

३४

जिन आँखों में करुणा का सिंधु छलकता था,
सबको अपनाने का सद्भाव ललकता था,
जिन आँखों मे स्वर्गों का नूर झलकता था,
वे मुँदी; नहीं
तारावलि नभ में
शरमाई ?

जिस जिह्वा से ऐसा जीवन रस गरता था,
पीड़ा हर, युग-युग के घावों को भरता था,
जिस जिह्वा से अमृत का निर्झर झरता था,
वह रुकी; नही
पृथ्वी की छाती
थर्राई ?

शत्-शत् माताओं की वत्सलता से निर्मित,
शत्-शत् माताओं की ममता से आलोड़ित,
बापू की निश्छल छाती छलनी-सी छिद्रित,
क्या तुमने देखी
और न आँखें
पथराईं ?

३५

जिसने रिवाल्वर तेरे आगे ताना था,
बापू, बतला, तूने क्या उसको माना था,
जो तूने उसको युग कर बद्ध प्रणाम किया ?
जग की; तेरी
आँखों में कितना
अंतर है !

वह दुनिया भर की नज़रों में हत्यारा था,
लेकिन निःसंशय वह भी तुझको प्यारा था
उसको भी तूने अपना अंतिम स्नेह दिया,
देखा, प्रभु की
छाया उसके भी
अंदर है।

तू बोल अगर सकता तो निश्चय यह कहता—
साईं जिसको जितने दिन रखता है, रहता,
उसने जब चाहा मुझको अपनी शरण लिया,
यह तो केवल
हरि की इच्छा
का अनुचर है।

३६

अनिम क्षण में जो भाव हृदय में स्थित होता,
उससे ही आत्मा का भविष्य निश्चित होता,
प्रार्थना सभा मे जाते तुमने प्राण दिए,
पाई होगी
तुमने प्रभु चरणों
की छाया।

जन्मते और मरते अति दुःसह दुख होता,
तन जर्जर पल-पल क्या-क्या कष्ट नही ढोता,
तुमने क्षण मे तन-जीर्ण-वसन को दूर किया,
की मुक्ति वरण
ठुकराकर
मिट्टी की काया।

कर कोटि जतन मुनि तन-मन-प्राण खपाते हैं,
पर अंत समय में राम नही कह पाते हैं,
तुमने अतिम श्वासों से 'राम' पुकार लिया,
ऋषि-मुनि-दुर्लभ
पद आज सहज
तुमने पाया।

३७

नाथू किसको पिस्तौल मारने को लाया,
थी गलित-पलित जिसकी जन-सेवा में काया ! —
काया ही केवल वह उनकी छू सकता था,
काया का बल था बापू ने कब दिखलाया,
थी बुद्धि कहाँ
उस जड़ मिट्टी के
धोंधा की।

उस ज़ेरा-बख़्तर से थे वे सज्जित-रक्षित,
जो सत्य-अहिंसा के तत्वों से था निर्मित,
ले चुकी परीक्षा थी जिसकी तप की ज्वाला,
थी एक ढाल उनकी ईश्वर निष्ठा निश्चित,
थी हिम्मत ही
हथियार हमारे
जोधा की।

था राजसूय का यज्ञ हुआ पूरा सकुशल,
गतिमान हुआ था आज़ादी का अश्व चपल,
फ़िरकेबंदी ने उठ उसका पथ रोका था,
वह डटा हुआ था उससे लड़ने को अविचल,
यह कैसा मख-विध्वंसी पागल प्रकट हुआ,
बलि की उसने
भारत के भाग्य-
पुरोधा की।

३८

जब से था हमने होश सँभाला उनका स्वर,
मुखरित करते थे ग्राम, नगर, गिरि, वन-प्रांतर,
सूरज से थे नभमंडल में वे उदय हुए,
हम गांधी की
दुनिया में जन्मे,
बड़े हुए।

चिड़ियाँ उनके गुण की गाथाएँ गातीं थीं,
दिग्वधुएँ उनके तप की शक्ति बताती थीं,
उनसे उत्साहित सहज हमारे हृदय हुए,
हम गांधी की
दुनिया में उठकर
खड़े हुए।

व राह कठिन, पर सच्ची ही दिखलाते थे,
चलकर उसपर ख़ुद चलना भी सिखलाते थे,
खुद जल-जलकर पथ पर आभा बिखराते थे,
बे गांधी के
हम अंधकार में
पड़े हुए।

३९

था जिसे नहीं परदेशी शासन का कुछ डर,
जिसने बतलाया था नाचारे ताक़तवर,
ऐसे बेजोड़ बहादुर नेता को पाकर
हम सबने अपने
को खुशक़िस्मत
समझा था।

हमने उसके तन में भारत का तन देखा,
हमने उसके मन में भारत का मन देखा,
उसके जीवन में भारत का जीवन देखा,
हमने उसका व्रत
भारत का व्रत
समझा था।

उसके हँसने में गंगा-जमुना लहराईं,
हाथों ने भारत की सीमाएँ सहलाईं,
पच्छिमी-पूरबी घाट लगे दृढ पग उसके,
सीने मे झलकी हिंद-सिधु की गहराई,
उसका मस्तक हमने
हिम पर्वत
समझा था।

वह भारत की संस्कृति-साधो से एक हुआ,
उसका पिछलगुआ हममे से प्रत्येक हुआ,
मिथ्या जो उसको था सबने मिथ्या माना,
सत जिसे कहा
उसने, सब ने सत
समझा था।

बे गांधी भारत कब अनुमाना जाता है,
बे गांधी भारत कब पहचाना जाता है,
अब अपना परिचित देश हुआ है बेगाना,
बचपन से हमने
उसको भारत
समझा था।

४०

हत्यारे गोरों की यौवन में सही मार,
ज़ालिम पठान का भी ओढ़ा दंडप्रहार,
लोहू-लुहान होने पर भी जो बचे प्राण,
कुछ काम दे गईं
किस्मत भारत
माता की।

जीवन को आश्रम के तप संयम से साधा,
जेलों की दीवारों में अपने को बाँधा,
कर लिया स्वयं को देश-दीनता का प्रमाण,
क्षण भर को भी
तृण से सुख की
कब इच्छा की।

तुम मारे-मारे फिरे लिए काया जर्जर,
तुमने रक्खे कितने ही अनशन व्रत दुर्धर,
दुख-ग्लानि-वेदना रहे तुम्हारे चिर सहचर,
बस एक शहादत
मिलनी तुमको
थी बाकी।

बच गईं तुम्हारी ट्रेन उलटने से तिल-तिल,
बम फटा निकट ही, सके न तुम रत्ती भर हिल,
इस इज़्ज़त को थी खोज तुम्हारी अरसे से,
हो गई सफल
जनवरी तीस की
चालाकी।

४१

घर तुमको जनता के हित कारागार हुआ,
तप, त्याग, साधना, दम, संयम, शृंगार हुआ,
उपहास, व्यंग, आक्रोश, रोष उपहार हुआ,
तुमने मानवता के
हित क्या-क्या
सहन किया।

हर मुहिम-मोरचे पर की तुमने अगुआई,
जो बात कही वह पहले करके दिखलाई,
संसार जानता नही तुम्हारा-सा जेता,
दायित्व देश भर
का कंधों पर
वहन किया।

तुम राजाओं में राजा न्याय-परायण थे,
तुम बीच दरिद्रों के दरिद्र नारायण थे,
जन मे हरिजन, तुम नेताओं के थे नेता,
अब तुमने ताज
शहादत का भी
पहन लिया।

४२

जो महिमावानों की महानता दिखलाई,
जब मौत मिली महिमावानो की-सी पाई,
वे मृत्यु महद्, शुचि, सुंदर इससे क्या पाते,
हम शोक मना
सकते अपनी
क्षति पर भारी।

उनके हाथों भारत का अभ्युत्थान हुआ
सच और अहिंसा का फिर से सम्मान हुआ,
उनका जीवन शापित जग को वरदान हुआ,
कर सिद्ध गए
वे एक पुरुष थे
अवतारी।

वह मृत्यु जिसे सुकरात सुधी ने पाई थी,
वह मृत्यु जिसे ईसा ने गले लगाई थी,
वह मृत्यु जिसे पाने को देव तरस जाते,
उस अमर मरण के
सहज बने वे
अधिकारी।

४३

यह जग अपना मग भूला हुआ मुसाफ़िर है,
चिर चंचल है, चिर विह्वल है, चिर अस्थिर है,
पथदर्शक इसको मिलते रहते बहुतेरे,
पर परित्राण
का ही इसके
सयोग नही।

ले स्वर्ग सँदेसा तुम भी पृथ्वी पर आए,
भूले पथ तुमने एक बार फिर दिखलाए,
पिछले नबियों का भाग्य तुम्हें भी था घेरे,
तुमको भी समझे
इस दुनिया के
लोग नहीं।

तुम अपने तप से ऊपर उठते चले गए,
पर हम पापों से नीचे धँसते चले गए,
तुम हमें छोड़कर स्वर्ग लोक को भले गए,
रह गई धरा थी
देव तुम्हारे
योग्य नहीं।

४४

भारत के आँगन में जो आग सुलगती थी,
उसकी ज्वाला तुमको ही आकर लगती थी,
जो आँख तुम्हारी जल की धार बहाती थी,
उससे भारत क्या, पृथ्वी पूर्ण नहाती थी,
किस तप से तुमको
थी यह अद्भुत
शक्ति मिली ?

क्या घृणा गई फैलाई बहरा देश हुआ,
अनसुना तुम्हारा दया-प्रेम-संदेश हुआ,
परिवर्तित भारत का चिर परिचित वेश हुआ,
यह देख तुम्हे, हे बापू, कितना क्लेश हुआ,
उन आदर्शों को लोग लगे देने धोखा
जिनको उनकी
थी एक समय पर
भक्ति मिली।

तन क्षीण तुम्हारा देश-दुःख से गलता था,
मन कोमल उसके पाप-ताप से जलता था,
सुन-देख अघट घटनाएँ प्राण निकलता था,
जीवन अब तुमको एक-एक क्षण खलता था,
हम झेलेंगे जो हश्र हमारा अब होगा,
तुमको तो, बापू,
मर्त्य कष्ट से
मुक्ति मिली।

४५

तुमने ग़ुलाम हिंदोस्तान में जन्म लिया,
अपना सारा जीवन इसमें ही बिता दिया,
मिट जाय गुलामी; और इसी तप का यह फल
तुम मरे आज
आज़ाद हिंद की
धरती पर।

हिंदू-मुस्लिम थे एक दूसरे के दुश्मन
तुम उनमें मेल कराने का ले बैठे प्रण,
इच्छित फलदायी सिद्ध हुआ पिछला अनशन,
अब दोनों अश्रु
बहाते हैं
तुमपर मिलकर।

बंदी जीवन से मुक्त हुई भारत माता,
हिंदू-मुस्लिम उद्यत कहलाने को भ्राता!
तुम जभी छोड़ते हमको हम होते विह्वल,
पर कहाँ तुम्हारे जग से जाने को आता,
इस से उत्तम,
उपयुक्त और
बेहतर अवसर।

४९

हम घृणा-क्रोध-कटुता जितनी फैलाते थे,
वे तप ज्वाला से अपनी नित्य पचाते थे,
कर गई मौत उनको हरि-चरणामृत अर्पण,
वे नित्य ज़हर का
प्याला चूमा
करते थे।

पद मिला उन्हें जिसके थे वे चिर अधिकारी,
हम समझे थे ग़लती से उनको संसारी,
कर्त्तव्य निरत भू पर उनका था छाया तन
प्रभु-गोदी में
मन से वे झूमा
करते थे।

वे बहुत दिनों से थे मरने से निडर हुए,
वे तो मरने के पहले ही थे अमर हुए,
क़ातिल, तूने काटी केवल अपनी गर्दन,
वे शीश हथेली
पर ले घूमा
करते थे।

४७

लड़नेवालों में तुम-सा कौन लड़ाका था,
हर एक देश में बँधा तुम्हारा साका था,
औ' शांति करानेवालों के तुम थे राजा,
खुलनेवाली थी
आँख जल्द ही
दुनिया की।

वह शक्ति दिखाई तुमने सिहासन डोले,
सत्ताधारी सम्राट तुम्हारी जय बोले,
तुमने सगर्व भगी बस्ती को अपनाया,
लघुतम-महानतम
दोनों ही से
समता की।

था दोस्त दिखाई देता तुमको दुश्मन में,
तुम प्रेम-सुधा बरसाते थे समरांगण में,
पर्वत-सी आत्मा रखते थे तृण से तन में,
थे शाहंशाह छिपाए अपने मंगन में,
था एक विरोधाभास तुम्हारे जीवन में,
तुमने मरकर
अपना ली राह
अमरता की

४८

वे अग्नि पताका ले दुनिया में आए थे,
वे स्वर्दूतों के, देवों के समझाए थे,
सौ भाँति प्रलोभन उनके पथ में आए थे,
पर ध्यान उन्हें था
सब दिन अपने
व्रत-प्रण का।

व नहीं चैन से या सुख से रह सकते थे,
वे नही विलासों, वैभव में बह सकते थे,
वे नही शिथिलता, दुर्बलता सह सकते थे,
जब तक अस्तित्व
कही पर भी था
तम घन का।

जीवन में जलने का ही था उनका निश्चय,
वे जला किए, तम हरा किए अविरत निर्भय,
प्रज्वलित दीप बुझन के पहले हो उठता,
होकर शहीद सौ गुने हुए वे तेजोमय,
यह चरमबिंदु था
समुचित उनके
जीवन का।

४९

बापू, कितने ही तेरे एक इशारे पर
फाँसीवाले तख्तों पर झूले हँस-हँसकर,
कितनों ने निर्दय गोली की बौछारों में
निर्भय होकर
अपनी चौड़ी
छाती खोली।

तू खाँस-खाँसकर बिस्तर पर गर मर जाता,
[जाना सब को होता जो दुनिया में आता।]
पहुँचाया जाता स्वर्गलोक के प्यारों में,
लज्जित होता
देख शहीदों
की टोली।

तू आज शहीदों का राजा, ओ अभिमानी,
तू सिद्ध शहीदों का अधिकारी सेनानी,
तेरी छाती ने भी गोली खानी जानी,
तूने भी अपने
लोहू से
खेली होली।

५०

जब कानपूर के हिंदू-मुस्लिम दंगे में
वह शिष्य तुम्हारा सत्य-अहिंसा अनुयायी
ख़ाली हाथों था घुसा भेड़ियों के दल में
औ' क़त्ल हुआ था
उनकी ही
रक्षा करते,

तब बापू तुमने अपने पीड़ित अंतर से
उद्‌गार किए थे व्यक्त इस तरह शब्दों में,
'मुझको गणेश शंकर से ईर्ष्या होती है,
भगवान काश
यह पावन मृत्यु
मुझे मिलती !

सच्चे दिल से निकली ऐसी सच्ची वाणी
की नहीं उपेक्षा परमेश्वर कर सकता था,
अब तो ईर्ष्या करने का कोई ठौर नहीं,
जाओ गणेश
शकर से भुज भर
गले मिलो।

तुम अमर शहीदों के चिर पावन लोहू से
धोए पथ पर, हे बापू, अपने चरण धरो,
इस वीर पंथ को छूकर और प्रशस्त करो,
मानव, मानव की दुनिया है इतनी अपूर्ण
होगा बहुतों को
अभी इसी पथ
से जाना।

५१

वे तप का तेज लिए थे अपने आनन पर,
सूरज से चमके आकर जग के आँगन पर,
वे जले कि जगती में उजियाला फैल गया,
वे जगे कि सोईं
सदियों को भी
जगा गए।

तम कटा विश्व ने एक नई आभा जानी,
जिसमें निष्प्रभ हो गए युगों के अभिमानी,
भर दलित-मर्दितों के अंदर उत्साह नया,
वे उनका सारा
भ्रम, संशय, भय
भगा गए।

हो सके न विचलित अपने पथ से वे क्षण को,
अपना वे कब समझे थे अपने जीवन को,
जीना तो उनका अर्पित ही था जन-गण को,
मरने को भी
वे जन सेवा
में लगा गए।

५२

सुकरात संत ने पिया ज़हर का प्याला था,
मीरा ने उसको चरणामृत कह ढाला था,
ऋषि दयानंद को पड़ा उसीसे पाला था,
हस्तियाँ इसी
पैमाने की
विष पीती हैं।

हजरत ईसा को चढ़ा दिया था सूली पर,
तन था नश्वर, लेकिन आत्मा थी अविनश्वर,
वह आज किए घर, कितनों के मन के अंदर,
वह वर्तमान,
सदियों पर सदियाँ
बीती हैं।

हम बापू को कब तक रख सकते थे अगोर,
हैं जन्म-निधन जीवन डोरी के ओर-छोर,
कितना महान आदर्श हमें वे गए छोड़,
कौमें ऊँचे
आदर्शों से ही
जीती हैं।

५३

जब देव-असुर दोनों ने मिलकर सिंधु मथा,
तब चौदह रत्नों में अंतिम अमृत निकला,
उस मधु रस के ऊपर कितना संघर्ष हुआ,
देवों ने किस
छल-बल से उसको
छक पाया।

बापू ने एकाकी अंतर-सागर मथकर
तप से, अलभ्य मानवतामृत को प्राप्त किया,
है सत्य-अहिंसा रूप और गुण इसके ही,
जो प्राप्त किया
बापू ने सबपर
बरसाया।

अमृत रहता है ज़हर-लहर के घेरे में
बे लड़े ज़हर से उसको पाना मुश्किल है,
बापू ने जीवन-सुधा लुटाई औरों में,
विष में केवल
अपने प्राणों को
झुलसाया।

५४

वह सत्य अहिसा का सागर था चिर निर्मल,
था नही सतह मे, तह मे तिनके भर का बल,
उसने कब जाना था जग का छोटापन, छल,
ये डाल सके थे
उसपर छाया-
छाप नहीं।

हमने मिथ्या से सत्य नापना चाहा था,
हमने हिंसा से सिंधु दया का थाहा था,
ख़ुदग़र्ज़ी से फ़ैयाज़ी को अवगाहा था,
उसकी गहराई
की हो पाई
माप नहीं।

हमने उसके आदर्शों पर बोली मारी,
हमने उसके वक्षस्थल पर गोली मारी,
अवतार क्षमा का वह जग में कहलाएगा,
आया उठकर
उसके होठों पर
शाप नहीं।

आत्मा बापू की माफ़ करे नरघातक को,
शामिल जिसमें सब जाति हुई उस पातक को,
इतिहास कभी यह पाप नहीं बिसराएगा,
इतिहास करेगा
क्षमा कभी
यह पाप नहीं।

५५

बापू के तन से बेज़बान लोहू बहकर,
उनका शरीर ढकनेवाली चादर रँगकर,
उनके पावों के नीचे की धरती तरकर
क्या सूख गया ?
क्या सूख सदा के
लिए गया ?

उनके लोहू के धब्बे हैं हर दामन पर,
उनके लोहू से लाल करोड़ों के हैं कर,
भारत की चप्पा-चप्पा भूमि उसीसे तर,
कसने समझा, उस जर्जर पंजर के अंदर
इतना लोहू है,
इतना ज़्यादा
लोहू है !

हाथों पर, कपड़ों पर, ज़मीन पर मचल-मचल
वह कहता है, 'तुम हो क़ातिल, तुम हो क़ातिल !'
चुप होना उसका बरसों-सदियों तक मुश्किल,
आनेवाली अनगिनत पीढ़ियों के सिर पर
चढ़कर बापू का ख़ून पुकारेगा बेडर !.......
तुमने उसको
ग़लती से समझा
बेज़बान।

५६

भारत के हाथों पाप हुआ ऐसा भारी,
है लगी हुई संपूर्ण जाति को हत्यारी,
इस महा दोष का यदि करना है प्रायश्चित,
अनुताप आग में
हमें युगों तक
जलना है।

हम भटक-भटककर मरुथल में मर जाएँगे,
निर्मल स्रोतों की राह नही हम पाएँगे,
यदि हमें पहुँचना है मनचाही मंज़िल तक
हमको उनके
बतलाए पथ पर
चलना है।

वे नहीं महज़ भारत के भाग्य विधाता थे,
वे सारी भावी दुनिया के भय-त्राता थे,
कर लेना है यदि उसको अपना अंत नहीं
वे साँचे थे,
जिसमें मानव को
ढलना है।

५७

हम सब अपने पापी हाथों को मलते हैं,
हम सब पछतावे की ज्वाला में जलते हैं,
लेकिन अब हम चाहे जितना रोएँ-धोएँ
वह लौट नही
सकता, जो स्वर्ग
सिधारा है।

दो बात नही करने पाए हम विदा समय,
तुम लोहू से कह गए, हमारा भरा हृदय,
हमने जीकर भारत के भाल कलंक दिया
तुमने मरकर
भारत का भाग्य
सँवारा है।

बापू, तुमसे यह अंतिम विनय हमारी है—
यद्यपि इसका यह देश नहीं अधिकारी है—
करना न इसे वंचित अपने आशीषों से,
यह बुरा-भला
जैसा है, देश
तुम्हारा है।

५८

भाग्य था वे थे हमारे पथ-प्रदर्शक,
और करते ही रहे वे यत्न भरसक,
हम न मोड़ें पाँव बे पहुँचे शिखर तक,
हम क़दम
उनके क़दम पर
धर न पाए।

हम चले वह चाल उनको लाज आई,
और हमने ग़लतियाँ पहचान पाईं,
किंतु पश्चात्ताप के आँसू सँजोकर
शोक हम
उनके हृदय का
हर न पाए।

वे नहीं बस एक भारतवर्ष के थे,
वे विधायक विश्व के उत्कर्ष के थे,
वे हमारे पास थे जग की धरोहर,
किंतु हम
उनकी हिफ़ाज़त
कर न पाए।

५६

पृथ्वी पर जितने देश, जाति औ' महापुरुष,
सब आज प्रकट करते विषाद गांधी जी की
हत्या पर अतिशय करुण और अतिशय निर्दय
जिसने भारत-
इतिहास कलंकित
बना दिया।

कोषों मे उनके थे जितने भी शब्द व्यक्त
करते सज्जनता, सहृदयता, शुचिता, मृदुता,
सबको निसार कर दिया उन्होने बापू पर,
था स्थान उन्होंने
ऐसा जग में
बना लिया।

हम हत्यारे के जाति-धर्म वालों ने क्या
समझी महानता उस महानतम सत्ता की,
जलती मशाल के नीचे रहा अँधेरा ही
बाहरवालों ने उन्हें सिद्ध साधक समझा,
घर के जोगी
का हमने क्या
सम्मान किया

६०

बापू के अवसान पर जब मन दुखित-उदास,
धीरज देते है हमें बाबा तुलसीदास।
'सुनहु भरत भावी प्रबल, बिलखि कहेउ मुनिनाथ,
हानि, लाभु, जीवनु, मरनु जसु अपजसु विधि हाथ।

अस विचारि केहि दीजिअ दोषू,
व्यरथ काहि पर कीजिअ रोषू।'
बापू की हत्या का, भाई,
संप्रदायपन उत्तरदायी।
पर न उसे क्या दोष लगाएँ,
नाथू को निष्पाप बताएँ?

नाथू को पापी कहें अथवा हम निष्पाप,
बापू के तन-त्याग पर मन में अति संताप।
संप्रदायपन धर्म हो या अधर्म की मूल,
बापू का हम शोक-दुख कैसे पाएँ भूल!

'तात विचार करहु मन माहीं,
सोचु जोग दसरथ नृप नाहीं।'
बापू ने कब निज व्रत छोड़ा,
सत्य-अहिंसा से मुँह मोड़ा?
मानवता के रहे उपासक,
वे अपनी अंतिम साँसों तक।
'सोचनीय नहिं कोसल राऊ,
भुवन चारि दस प्रगट प्रभाऊ
भयेउ, न अहै, न अब होनिहारा
भूप भरत जस पिता तुम्हारा।'
भूप भरत को जो दिया गुरु वशिष्ठ ने ज्ञान,
भारत को करता वही अब सांत्वना प्रदान।
सोचनीय बापू नहीं, सोचनीय हम लोग,
सिद्ध न अपने को सके कर हम उनके जोग।

६१

जब तुम सजीव धरती पर चलते फिरते थे,
जब तुम अपनी निर्मल वाणी बिखराते थे,
तब तुमको हम वह इज्जत आदर दे न सके,
जिसके तुम थे
हे बापू, सच्चे
अधिकारी।

लेकिन अब जब तुम दुनिया से कर कूच गए
हमको अपनी भारी ग़लती महसूस हुई,
मुख नही तुम्हारा गुण वर्णन करते थकता,
आँखें श्रद्धांजलि
देते हुए
नहीं थकती।

क्यों न हो हमारी उन्ही कुपूतों में गिनती
जो कष्ट पिता को जीवन मे पहुँचाते है,
लेकिन जब वह टिकठी के ऊपर चढ़ जाता,
तब बड़े-बड़े
पिंडे उसपर
लुढ़काते हैं।

है कमी नही दुनिया में हँसनेवालों की,
हमने अपने कर्मों से मौका उन्हे दिया,
यह व्यंग वचन मेरे सुनने मे आया है,
मौजूद पिता आँखों को नहीं सुहाता है,
मृत पिता आँसुओं
से नहलाया जाता है।

जग में ऐसे भी आँसू को, उच्छ्वासों की
जो कीमत है, बापू, तुमने अवरेखी थी,
तुमने इन धुँधले-धुँधले चिन्हों मे ही तो
मानव सुधार
की आशाएँ दृढ़
देखी थी।

६२

खोकर अपने हाथों से दौलत गांधी-सी,
तू आज खड़ी भारतमाता अपराधी-सी,
दृग द्रवित किए, सिर नमित किए, मुँह लटकाए,
छाती धक-धक,
भीगा मस्तक,
रग-रग सशंक।

गांधी तेरे मुख-मंडल का था उजियाला,
गोडसे लगाकर, हाय, गया खाँचा काला,
अचरज होगा यदि तृण से पर्वत छिप जाए,
आभामय है
अब भी तेरा
आनन-मयंक।

यदि अवसर यह लज्जा से शीश झुकाने का,
तो गर्वसहित ऊपर भी शीश उठाने का,
अवसाद घना उत्साह नया बनकर छाए,
बलि-गौरव में
छिप जाए हत्या
का कलंक।

६३

वे आत्माजीवी थे काया से कहीं परे,
वे गोली खाकर और जी उठे, नहीं मरे,
जब से तन चढ़कर चिता हो गया राख-धूर,
तब से आत्मा
की और महत्ता
जना गए।

उनके जीवन में था ऐसा जादू का रस,
कर लेते थे वे कोटि-कोटि को अपने बस,
उनका प्रभाव हो नहीं सकेगा कभी दूर,
जाते-जाते
बलि-रक्त-सुरा
वे छना गए।

यह झूठ, कि, माता, तेरा आज सुहाग लुटा,
यह झूठ, कि तेरे माथे का सिंदूर छुटा,
अपने माणिक लोहू से तेरी माँग पूर
वे अचल सुहागिन
तुझे, अभागिन,
बना गए।

६४

अज्ञान, अशिक्षित और अदीक्षित भारत मे
जिसमें मज़हब की अधी श्रद्धा भर बाक़ी,
आसान बड़ा था उसका झंडा ऊँचा कर
लोगों को भरमाना
या पागल
कर देना।

हैं धर्म नाम पर बेधर्मी की बात हुईं,
हैं धर्म नाम पर बेधर्मी के काम हुए,
हैं धर्म नाम पर पाप कराए और किए
कितने, कितनों ने
केवल स्वार्थ
पुजाने को।

है धर्म युद्ध में आना कोई खेल नहीं
उसकी तैयारी आत्म त्याग, तप, साधन है,
इसमें विजयी होने की कीमत गर्दन है,
जो आज सुखों के साज सजाते महलों में,
जो आज बधाइं लूट रहे हैं जलसों में
वे धर्म आड़ में लड़नेवाले थे योद्धा,
बस धर्म-नाम पर
लड़नेवाले
तो तुम थे!

६५

है गाधी हिंदू जनता का दुश्मन भारी,
वह करता है तुरुकों की सदा तरफदारी,
उसका प्रभाव हिंदुत्व के लिए भयकारी,
यह बात घुसी
कुछ घूमे-उल्टे
माथो मे।

हिंदुत्व दिव्यतम बापू जी मे व्यक्त हुआ,
ससार उसीके कारण उनका भक्त हुआ,
हिंदू आदर्शों के ही रहकर अनुयायी
वे आज चमकते
विश्व जनों की
पाँतों मे।

जिसने मानवता के हित इतना दुख झेला,
वह कर सकता था हिंदूपन की अवहेलना,
हिंदुत्व शब्द है मानवता का पर्यायी,
हिदुत्व सुरक्षित
था बापू के
हाथों में।

६६

उसने खुद तृण-कुश-कटक जाल चबाया,
लेकिन हमको छाती का क्षीर पिलाया,
दी लगा हमारे ही हित में मृत काया,
गौ के से गुण
थे उस माधव
मोहन में।

था एक अहिंसा, दूजा सत्य किनारा,
बहती थी जिसके बीच प्रेम की धारा,
गांधी ने लाखों नारि-नरो को तारा,
बहती गगा-सा
था वह जग-
आँगन में।

उसने तपमय कर्मों में उम्र बिताई,
मुँह मोड़ लिया जब फल की बेला आई,
उस वीतराग से ऋद्धि-सिद्धि शरमाई,
थी मूर्तिमान
गीता उसके
जीवन में।

गौ-गंगा औ' गीता की याद दिलाता,
वह चला गया इस दुनिया से मुसकाता,
हिंदूपन का जो शत्रु उसे बतलाता,
कुछ पाप छिपा
है उसके
हिंदूपन में।

६७

हिंदू-जनता को रहा सदा वह धर्म-प्राण,
मुस्लिम जब समझे, निकला सच्चा मुसलमान,
ईसाई को था भू पर ईसा का प्रमाण,
पारसी, जैन, सिख, बौद्धों को था प्रिय समान,
वह संत सभी
की पूजा का
अधिकारी था।

जीवन भर रक्खी उसने अपनी आन एक--
हिंदू-मुस्लिम-ईसाई--सब में प्राण एक,
है छिपा हुआ सब के अंदर इंसान एक,
है बसा हुआ सब के भीतर भगवान एक,
वह मानवता-
मंदिर का एक
पुजारी था।

थी आँख तैरती दुनिया की ऊपर-ऊपर,
वह भेद विभेदों को पैठा, पहुँचा भीतर,
उसने ऊपर उठ कहा, किया, औ' दिखलाया,
बेमानी क़ौमों, देशों, धर्मों के अंतर,
वह सौ विरोध
के बीच
समन्वयकारी था।

६८

जब लाखों, कर्मों से पशु को शरमाते थे,
बस एक दूसरे को दोषी ठहराते थे,
खुशक़िस्मत थे, निष्पक्ष एक तो हम में था,
नाथू आकर के
भाग्य हमारा
फूट गया।

इस दुनिया में हर एक वस्तु की सीमा है,
फ़िरक़ेबंदी का ज़ोर आजकल धीमा है,
उस नभ-ऊँची सत्ता पर हाथ उठाने मे,
जैसे उसका
सारा बल-विक्रम
टूट गया।

यह संप्रदायपन एक बडा ग़ुब्बारा था,
उसने अपने को इस गति से विस्तारा था,
उससे ढक जानेवाला था संपूर्ण हिंद,
बापू के प्राणों
को छूकर वह
फूट गया।

६९

उसके बेटे दोनो थे हिंदू-मुसलमान
वह बना रहा था हिंदू को तप-त्यागप्राण
मुस्लिम के पथ मे बिछा रहा था आत्मदान
गिरता न एक
इससे, दूजा
बनता महान।

उसको प्रिय थे दोनो भगवद् गीता, क़ुरान,
दोनो को देता था अपनी श्रद्धा समान,
पाता था दोनो मे प्रभु-वाणी का प्रमाण,
दो भिन्न सुरों
से गाता था
वह एक गान।

उस धवल कमल को तुमने समझा तक्षक था,
पालक था, जिसको तुमने समझा भक्षक था,
वह दुश्मन नंबर एक तुम्हारा रक्षक था,
धीरे-धीरे
तुमको होगा
यह भासमान।

७०

ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान।

हिंदू-मुस्लिम शत्रु परस्पर,
हुए धर्म का लेकर नाम,
बापू ने दोनों को बिठला साथ कराया यह शुचि गान—
ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान।

ईश्वर की अल्ला की पूजा
दोनों की दोनों बेकाम,
भूल अगर हम जाएँ इसके कारण रह सकना इंमान।
ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान।

बापू तो अब अंतर्धान,
छोड़ा है जो काम उन्होंने
उसको हम सब दें अंजाम,
बापू के मुख से निकले इस महामंत्र को करें प्रमाण।
ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान।

७१

ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान।

सरि-संगम, बन-गिरि-आश्रम से
ऋषियों ने जो कहा पुकार,
आज उसीको दुहराता है यह भंगी बस्ती का संत,
....एकं सद्विप्रा बहुधा वदंति!
ईश्वर-अल्ला-एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान।

आदि काल से सायं-प्रातः
आर्य जाति ने हाथ पसार
जिसको माँगा, वही माँगता यह नंगा साधू अवदान,
...धियो योनः प्रचोदयात् !
ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको *सन्मति* दे भगवान।

वह था ऐसा हृदय उदार
भेद पराए औ' अपने का
उसे सदा था अस्वीकार,
एक मुल्क ही, एक ख़ल्क ही समझा वह जीवन पर्यंत,
...सर्वे भद्राणि पश्यंतु
ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान।

७२

एक हज़ार बरस की जिसने
कर दी दूर गुलामी,
उस नेताओं के नेता को
एक हज़ार सलामी,

किया योग्य उसने अयोग्य को
यौगिक शक्ति जगा के।

आपस में कटते-मरते थे
भूले देश भलाई,
सिखलाया उसने हैं हिंदू-
मुस्लिम भाई-भाई,
मंत्र मुहब्बत का दोनों के
कानों में बिठला के।

हिंदू करते थे सदियों से
जिनकी क्रूर अवज्ञा,
उन्हीं अछूतों को दी उसने
हरिजन की शुभ संज्ञा,
किए अपावन उसने पावन
दृग-जल से नहला के।

झुका धरा का सारा वैभव
उसके तप के आगे,
दान दिया जिसने अपने को
वह जग से क्या माँगे,
धन्य हुआ वह मानव के हित
तन-मन-प्राण लगा के।

उसने अपने जीवन में वह
विशद साधना साधी,
जगती के भाग्योदय का है
नाम दूसरा गांधी,
शांति विश्व पाएगा केवल
उसका पथ अपना के

भारतीय जीवन का सबसे
उज्जवल रूप दिखा के,
भारतीय संस्कृति का सबसे
व्यापक अर्थ बता के,
साथ हुआ गांधी गायत्री,
गीता, गो, गंगा के।

७३

नरसी मेहता का गीत रेडियो गाता है,
जो वैष्णव जन के गुण लक्षण बतलाता है,
पद-पद पर चित्र तुम्हारा आगे आता है,
जैसे कवि ने
यह लिखा तुम्हें ही
रख मन में।

तुमने ही पीर पराई अपनी-सी जानी,
पर दुख उपकारी रहकर भी निर अभिमानी,
निश्चल रक्खा तन-मन, निश्चल रक्खी वाणी,
पर श्री, पर स्त्री
पैठी न तुम्हारे
लोचन में।

निंदा न किसी की भी की, नित साधू बंदे,
काटे तुमने पग-पग पर तृष्णा के फंदे,
मिथ्या से मुख, विषयों से चित न किए गंदे,
क्षण भर न रहे
तुम क्रोध-कपट के
शासन में।

तुम राम नाम के अनुरागी निकले अनन्य,
कब तुम्हें छू सके दुर्गुण, माया, मोह-जन्य,
हो गई तुम्हारी जननी तुमसे धन्य-धन्य,
तुम मूर्त्तिमान
बन गए गान वह
जीवन में।

७४

गांधी को हत्यारे ने हमसे छीन लिया,
भारत ही क्या, पृथ्वी भर को श्री हीन किया
भारत ही क्या पृथ्वी भर को ग़मगीन किया,
आओ, हम उनको
अब दिल में
थापित कर लें।

आचार्य नबी कितने इस दुनिया में आए,
आदर्श जगत ने कितने उनके अपनाए,
इसके पहले गांधी को भी जग बिसराए,
आओ, हम उनके
मूल तत्त्व
संचित कर लें।

रज की विनम्रता से रचकर हम उनका तन,
रखकर उसके अंदर मानवता का मृदु मन,
दें उसको सत्य-अहिंसा का श्वासस्पंदन,
आओ, हम बापू
को फिर से
जीवित कर लें।

७५

हिंसा जो उसको चाल रुचे चल सकती है,
पशु बल से अब वह मानव को छल सकती है,
उनको काबू में रखनेवाला दूर हुआ,
उठ गई अहिंसा
आज धरा के
आँगन से।

निर्भय होकर अब चल न सकेगी अच्छाई,
सब काल रहेगी सुदरता अब शरमाई,
झूठेपन को अब मात करेगी सच्चाई,
ढक अपना मुँह
लफ्फ़ाजी के
अवगुंठन स।

संसार-ज़माना कितना ही पछताएगा,
लेकिन अब जल्दी शख्स न ऐसा आएगा
जो पाजी को दे अपने दिल के साथ दुआ,
लेकिन अविरत
लड़ता जाए
पाजीपन से।

७८

अपने ईश्वर पर उसको बड़ा भरोसा था,
सपने में भी उसने न किसी को कोसा था,
दुश्मनी करे कोई या उसका दोस्त बने,
दुनिया में उसको
नहीं किसी से
गिला रहा।

पिछले कुछ वर्षों में कितना कीचड़ उछला
हो गया कलंकित कितनों का मुखड़ा उजला,
पर कभी न उसमे उसके निर्मल अंग सने,
वह तम-कर्दम
पर ज्वलित कमल सा
खिला रहा।

हम आज़ादी के पास पहुँच ज्योंही पाए,
फ़िरक़ेबदी के वह भीषण झोंके आए,
हम नौजवान भी उससे भागे, घबराए,
पर ज़ेर उसे सारी ताक़त से करने में
अपनी अंतिम
सांसों तक बूढ़ा
पिला रहा।

जो काम अधूरा उसने अपना छोड़ा था,
जिसमें हमने ही अटकाया रोड़ा था
(पूरे होकर ही छूटे उसके काम ठने)
हमको उसकी
सुधि बार-बार
है दिला रहा।

७७

जिस दुनिया में भौतिकता पूजी जाती थी,

अपने बल, अपने वैभव पर इतराती थी,

उसमे तुमने केवल ख़ाली हाथों आकर

आत्मिक गौरव-

गरिमा को फिर से

थाप दिया।

जिस दुनिया में पशुता की मची दुहाई थी,

दानवता की ही ओर सयत्न चढाई थी,

उसको तुमने अपने चरित्र की ताक़त पर

स्वर्गिक शृंगों पर

चढ़ने का

संकेत किया।

जो दुनिया थी शंका-संदेहों से धुँधली,
उसमे तुम लाए श्रद्धा की आभा उजली,
इस नास्तिकता के, अविश्वास के युग मे भी
जो नही तुम्हारी पलकों से पल मात्र टली,
इसका कि मनुज में ही होता विकसित ईश्वर
पक्का सबूत
अपने को तुमन
बना लिया।

तुम चले गए, क्या भौतिकता फिर छाएगी?
क्या पशुता फिर अपना साम्राज्य बढाएगी?
मानवता फिर दानवता मे खो जाएगी?
क्या ज्योति नहीं अब और जगत में आएगी?
इन प्रश्नो से
मंथित है मेरा
आज हिया।

७८

थी राजनीति क्या, छल-बल सिद्ध अखाड़ा था,
गांधी जी ने उसमें घुसकर हुंकारा था—
मैं सत्य-अहिंसा से मुँह कभी न मोड़ूँगा,
मैं मार्ग और
मंज़िल को एक
बनाऊँगा।

ऊँची से ऊँची मंज़िल पर आँखें दृढ़ कर
मैं जाऊँगा उस तक चलकर ऊँचे पथ पर,
नीचे पथ से ऊँची मंज़िल गिर जाती है,
मैं पाप न ऐसा
सिर लूँगा,
मिट जाऊँगा।

भारत-आज़ादी प्यारी प्राणों से बढ़कर,
उसपर मेरा रोयाँ-रोयाँ है न्योछावर
लेकिन तुम लाओ उसको गंदे हाथों से,
मैं उसको
अपने पैरों से
ठुकराऊँगा।

७९

वे कहते थे, दुश्मन को बस वह जीत सका,
जो प्रेम-मुहब्बत से कर उसको मीत सका,
औ' प्रेम-मुहब्बत की है ख़ास कसौटी क्या?
उसको छूकर
सब क्रोध-घृणा-
कटुता भागे।

वे कटंक पथ में फूल बिछाते चले गए,
अपने दुश्मन की भूल बताते चले गए,
सब को अपने अनुकूल बनाते चले गए,
आदर्श अहिंसा
और सत्य के
बे-त्यागे।

मूज़ी को भी वे दोस्त बनाकर ही माने,
क्या हुआ किसी पागल ने मारा अनजाने,
मुस्लिम, अंग्रेज़ विरोधी थे सबसे ज्यादा,
वे आज प्रशंसा
में उनकी
सबसे आगे।

८०

बापू के मरने पर यह शब्द जिना के थे,
गांधी निःसंशय उन महान पुरुषों मे थे,
जिनको था हिंदू संप्रदाय ने जन्म दिया
औ' रहे सदा
हिंदू ही उनके
अनुयायी।

ओ जिना, सदा तुम कड़वी बात रहे कहते,
हम तो अब इनके आदी हैं सहते-सहते,
दुख और लाज से आज हमारा दबा हिया,
दुनिया परखेगी
इन जुमलों की
सच्चाई।

सब सभ्य जगत ने उनके गुण को पहचाना,
युग महापुरुष पदवी से उनको सन्माना,
भावी मानवता का उनको प्रतिनिधि जाना,
तुम लाँघ न पाए
फ़िरक़ेबंदी की
खाई।

८१

यह सच है, नाथू ने बापू जी को मारा,
क्या इतने ही से जीत गया है हत्यारा,
क्या गांधी जी थे छिति, जल, पावक, गगन, पवन ?
वे अगर यही थे
तो भी हत्यारा
हारा।

छिति में है उनकी क्षमाशीलता, धृति बाकी,
जल है उनके मन की कोमलता का साखी,
पावक उनकी पावनता का करता वर्णन,
जिसमें तपकर
निखरा उनका
जीवन कंचन।

है व्यक्त गगन से उनके क़द की ऊँचाई,
है व्यक्त गगन से उनके दिल की चौड़ाई,
है उनका ही मंदिर-मदिर, आँगन-आँगन
संदेश प्रचारित
मुक्त समीरण
के द्वारा।

८२

उसने अपना सिद्धांत न बदला मात्र लेश,
पलटा शासन, कट गई कौम, बँट गया देश,
वह एक शिला थी निष्ठा की ऐसी अविकल,
सातों सागर
का बल जिसको
दहला न सका

छा गया क्षितिज तक अंधक अंधड़-अंधकार,
नक्षत्र, चाँद, सूरज ने भी ली मान हार,
वह दीपशिखा थी एक ऊर्ध्व ऐसी अविचल,
उंचास पवन
का वेग जिसे
बिठला न सका!

पापों की ऐसी चली धार दुर्दम, दुर्धर,
हो गए मलिन निर्मल से निर्मल नद-निर्झर,
वह शुद्ध छीर का ऐसा था सुस्थिर सीकर,
जिसको काँजी
का सिंधु कभी
बिलगा न सका।

८३

तुम गए, भाग्य ही हमने समझा अस्त हुआ,
वह चिता-धूम के तिमिर तोम में अस्त हुआ,
ऐसे ग़म मे पागल मनुष्य हो जाता है,
कुछ सच होता
है, कुछ को सच
बतलाता है।

सच तो यह है, तुम थे ज़मीन पर कभी नहीं,
तुम नभ में थे, थी छाया से अभिषिक्त मही,
छाया विलुप्त हो गई, मगर तुम कहाँ हटे,
तुम भारत के
सौभाग्य क्षितिज पर
अडिग डटे।

तुम चमक रहे हो अब भी अंबर के ऊपर,
तुम ध्रुव तारा हो जिसकी आभा अविनश्वर,
तुम अभी जगत को सदियों राह दिखाओगे,
तुम भावी की
नौका को पार
लगाओगे।

८४

बापू-बापू कहना तुमको है बहुत सरल,
कुछ कहने में लगता है जिह्वा का चंचल,
अपने को बेटा साबित करना है मुश्किल,
बेटे भी कितने
बापों को दे
दगा गए।

तुमने हमको जाना उन्मादी-उत्पाती,
फिर भी हमको ही सौंप गए अपनी थाती,
देखो हम उनको उज्ज्वल कितना रखते है,
आदर्श हमारे
मन में जो तुम
जगा गए।

दे गए वसीयतनामा अपना तुम हमको--
कुछ और नहीं, यह एक चुनौती है तमको--
हम नहीं बदल सकते हैं उसका अक्षर भर,
तुम इसपर अपनी
मुहर लहू की
लगा गए।

८५

बापू था ऐसा वातावरण विषावत बना,
जो तुम अमृतमय बातें हमें बताते थे,
वे अप्रिय थीं हो गईं हमारे कानों को,
लगता था तुम
बे ठीक राह
बतलाते हो।

तुम अपने पथ के थे इतने दृढ़ विश्वासी,
तुम एक तरफ़ ही हाथ दिखाते सदा रहे,
दुनिया की दुनिया चली दूसरी ओर मगर
तुम एक सत्य
की सतत लगाते
सदा रहे।

जब नहीं आज तुम रहे राह दिखलाने को,
तब प्रकट कि जो तुम थे कहते, था ठीक वही,
जिसपर तुम अपने पद-चिन्हों को छोड़ गए,
आनेवाली
दुनिया की सीधी
लीक वही।

हमने विरोध जब किया तुम्हारा था तब भी
अंतरतम ने तुमको ही सच्चा माना था,
जितना हमने अपने को था जाना, समझा,
उससे ज़्यादा
तुमने हमको
पहचाना था।

तुम सत्य-अहिंसा के मत से कैसे हटते,
दृढ बीज आदि से इनका था मन में बोया,
हम चकित, कृतज्ञ, तुम्हारे आगे नत इसपर—
हममें भी जो
विश्वास न था
तुमने खोया।

८६

बापू तुमसे जो सत्य प्रवाहित होते थे,
उनके हम लोगों के अंतर तक आने में,
ऐसा लगता है, कारण प्रकट नहीं होता,
जैसे यह देह
तुम्हारी देती
बाधा थी।

जिस दिन से वह जड़ होकर, जलकर क्षार हुई,
उन बातों की सच्चाई ही है नहीं खुली,
दिल की तह से आवाज़ें उठकर कहती हैं,
हमको मुद्दत से
उनपर बड़ा
अक़ीदा था।

मेरे मन में उठता सवाल है रह-रहकर
पाता जवाब हूँ इसका ढूँढे कहीं नहीं,
मुझको अपने को ठीक समझने की क़ीमत,
क्यों तुमको देनी
पड़ी जिगर के
लोहू से?

८७

जब गांधी जी थे चले स्वर्ग से पृथ्वी को
मानव की पशुता से, दानवता से लड़ने,
तब देवों ने था उनको यह आदेश किया,
लो देह भीम की,
बल-विक्रम
बजरंगी का।

लो भुजा विष्णु की चार, एक में गदा धरो,
करवाल एक मे और एक में खर त्रिशूल,
औ' चक्र सुदर्शन एक हाथ की उँगली पर,
पशुता-दानवता
से लड़ना है
महा कठिन।

गांधी जी अपने प्रभु के आगे हो नत शिर
बोले थे मुझको दो तन दुर्बल मानव का,
लेकिन मुझमें सुर दुर्लभ आत्मा का बल दो,
आक्रमण मुझे करना है उस अंतर-गढ़ पर,
जो मूल प्रेरणा है पशुता-दानवता की;
कह 'एवमस्तु' उनको था प्रभु ने विदा किया।

८८

भूले से भी तुमने यह दावा नही किया
लेकिन अपने कामों से सबको दिखा दिया---
उल्टा अपने को कण-तिनके सा लघु समझा---
बापू, तुम थे
सच्चे अर्थों में
पैगंबर।

था ,सत्य, अहिंसा' शब्द जगत ने जान लिया
पर उनके अर्थों का था कितना मान किया
तुमने ही की उनकी विदग्ध, व्यापक व्याख्या,
की सिद्ध सफलता
उनकी, उनपर
चल, जलकर।

हम देख नहीं पाते है दुनिया के आगे
हम मृग-तृष्णा की ओर चले जाते भागे
सब ऊँचे आदर्शों-उद्देश्यों को त्यागे,
तुम एक शहादत
थे बहिश्त की
धरती पर।

८६

जब कि भारत भूमि थी भीषण तिमिर मे आवृना,
जब कि अपनी शक्ति का भी था नही हमको पता
तब कहा तुमने कि है परतंत्रना भारी खना,
और मार्ग स्वतत्रता का भी दिया सीधा बता,
देव, थे उस कोटि के तुम, थे कि जिसके कृष्ण-राम,
चल दिए संसार भर को शक्तियाँ अपनी जता।
अवतरित हो व्यक्त की तुमने असीम उदारता,

यदा यदाहि धर्मस्य
ग्लानिर्भवति भारत,
अभ्युत्थानमधर्मस्य
तदात्मानं सृजाम्यहम ।

पर गए तुम काम तो होने न पाया था खतम।
आज है तम तोम में डूबी हुई दुनिया तमाम,

परित्राणाय साधूना
विनाशाय च दुष्कृनाम्,
धर्म संस्थापनार्थाय
संभवामि युगे युगे ।

याद कर यह पैज अनुपम ज्योति आशा की जगे ।

९०

जब स्वर्ग लोक में पहुँचे बापू तन तजकर
भगवान बुद्ध, ईसादिक पावन पैगंबर—
सब आए उनके पास पूछने को सत्वर,
आदर्शों का जो दीप जलाया था हमने
क्या तुमने उसको
उसी तरह
जलता पाया ?

बापू बोले, आदर्शों की वह दीप-शिखा
जो आप सबों के तप से जागी थी भू पर,
ले चुके परीक्षा हैं उसकी उंचास पवन,
वह क्षीणकाय
होकर भी है
तम के ऊपर।

लेकिन उसकी संजीवन शक्ति बढ़ाने को
मानव देता है उसको अपना स्नेह नहीं,
वह नहीं समझता स्नेह निकलता अंतर से
बरसा सकते
उसको अंबर से
मेघ नहीं।

जीवन भर अपना हृदय गला उसमें भरता
मैं रहा दीप वह अधिकाधिक जाग्रत करता,
जब लगा वहाँ से चलने अपना स्नेह-रक्त
आदर्शों के
उस दीवे में
भरता आया।

९१

था उचित कि गांधी जी की निर्मम हत्या पर
तारे छिप जाते, काला हो जाता अंबर,
केवल कलंक अवशिष्ट चंद्रमा रह जाता,
कुछ और नज़ारा
था जब ऊपर
गई नज़र।

अंबर में एक प्रतीक्षा का कौतूहल था,
तारों का आनन पहले से भी उज्ज्वल था,
वे पंथ किसी का जैसे ज्योतित करते हों,
नभ वात किसीके
स्वागत में
चिर चंचल था।

उस महाशोक मे भी मन में अभिमान हुआ,
धरती के ऊपर कुछ ऐसा बलिदान हुआ,
प्रतिफलित हुआ धरणी के तप से कुछ ऐसा,
जिसका अमरों
के आँगन में
सम्मान हुआ।

अवनी गौरव से अंकित हों नभ के लेखे,
क्या लिए देवताओं ने ही यश के ठेके,
अवतार स्वर्ग का ही पृथ्वी ने जाना है,
पृथ्वी का अभ्युत्थान
स्वर्ग भी तो
देखे!

६२

दस लाख जनों के जिसके शव पर फूल चढ़े,
दस लाख लोग जिसकी अर्थी के साथ चले,
दस लाख मुखों से जिसकी जय-जयकार हुई।
वह मरा हुआ
भी लाखो ज़िदों
का नेता।

जिसके मरने पर सारी दुनिया चीख़ उठी,
जिसके मरने पर सारे जग ने आह भरी,
सारे जहान की आँखों से आँसू निकले,
वह मरकर भी
अगणित हृदयों मे
अमर हुआ।

जिसके मरने पर देश-देश ने यह समझा,
जैसे उसने कोई अपना मुखिया खोया,
जिसके मरने पर क़ौम-क़ौम की झुकी ध्वजा
मातम करने को व्यक्त, समादर देने को,
उससे देवों
को ईर्ष्या क्या न
हुई होगी!

९३

ऐसा भी कोई जीवन का मैदान कहीं
जिसने पाया कुछ बापू से वरदान नहीं ?
मानव के हित जो कुछ भी रखता था माने
बापू ने सबको
गिन-गिनकर
अवगाह लिया।

बापू की छाती की हर साँस तपस्या थी,
आती-जाती हल करती एक समस्या थी,
पल बिना दिए कुछ भेद कहाँ पाया जाने,
बापू ने जीवन
के क्षण-क्षण को
थाह लिया।

किसके मरने पर जग भर को पछताव हुआ ?
किसके मरने पर इतना हृदय मथाव हुआ ?
किसके मरने का इतना अधिक प्रभाव हुआ ?
बनियापन अपना सिद्ध किया सोलह आने,
जीने की क़ीमत कर वसूल पाई-पाई,
मरने का भी
बापू ने मूल्य
उगाह लिया।

६४

तुम उठा लुकाठी, खड़े हुए चौराहे पर,
बोले, वह साथ चले जो अपना दाहे घर,
तुमने था अपना पहले भस्मीभूत किया,
फिर ऐसा नेता
देश कभी क्या
पाएगा ?

फिर तुमने अपने हाथों से ही अपना
कर अलग देह से रक्खा उसको धरती पर,
फिर उसके ऊपर तुमने अपना पाँव दिया,
यह कठिन साधना देख कँपे धरती-अंबर,
है कोई जो
फिर ऐसी राह
बनाएगा ?

इस कठिन पंथ पर चलना था आसान नहीं,
हम चले तुम्हारे साथ, कभी अभिमान नहीं,
था, बापू, तुमने हमें गोद में उठा लिया,
यह आनेवाला
दिन सबको
बतलाएगा।

९५

गुण तो निःसंशय देश तुम्हारे गाएगा,
तुम-सा सदियों के बाद कहीं फिर पाएगा,
पर जिन आदर्शों को लेकर तुम जिए-मरे,
कितना उनको
कल का भारत
अपनाएगा ?

बाएँ था सागर औ' दाएँ था दावानल,
तुम चले बीच दोनों के, साधक, सम्हल-सम्हल,
तुम खड्गधार-सा पथ प्रेम का छोड़ गए,
लेकिन उसपर
पावों को कौन
बढ़ाएगा ?

जो पहन चुनौती पशुता को दी थी तुमने,
जो पहन दनुजता से कुश्ती ली थी तुमने,
तुम मानवता का महा कवच तो छोड़ गए,
लेकिन उसके
बोझे को कौन
उठाएगा ?

शासन-सम्राट डरे जिसकी टंकारों से,
घबराई फ़िरकेंवारी जिसके वारों से,
तुम सत्य-अहिंसा का अजगव तो छोड़ गए,
लेकिन उसपर
प्रत्यंचा कौन
चढ़ाएगा ?

९६

बलिदानी तो अपने प्राणों से जाता है
फल होता क्या, वह नही देखने आता है,
बापू के सिर से दूर हुई जिम्मेदारी,
बोझा आया
अब हम सबके
सिर पर भारी।

वे जैसा कहते थे यदि हम वैसा करते
तो क्यों वे सीने पर गोली खाकर मरते,
उनके जीते तो बात न हम उनकी मानें,
मरने पर ही,
आओ, हम उनको
पहचानें।

जो शांति न हम उनको जीवन में दे पाए,
आओ, हम उनकी आत्मा को ही पहुँचाएँ,
इसका कुछ उनके निकट भले ही अर्थ न हो,
लेकिन हमको कुछ ऐसा करना है जिससे,
बलिदान हमारे
बापू जी का
व्यर्थ न हो।

६७

ओ देशवासियो, बैठ न जाओ पत्थर से
ओ देशवासियो रोओ मत यों निर्झर से,
दरख़्वास्त करें, आओ, कुछ अपने ईश्वर से,
वह सुनता है
ग़मज़दों और
रंजीदों की

जब सार सरकता-सा लगता जग-जीवन से,
अभिषिक्त करे, आओ, अपने को इस प्रण से—
हम कभी न मिटने देंगे भारत के मन से
दुनिया ऊँचे
आदर्शों की,
उम्मीदों की।

साधना एक युग-युग अंतर में ठनी रहे—
यह भूमि बुद्ध-बापू-से सुत की जनी रहे
प्रार्थना एक, युग-युग पृथ्वी पर बनी रहे
यह जाति
योगियों, संतों
और शहीदों की।

९८

भारत माता की युग-युग उर्वर धरती पर
सब जग वंदित बापू की छाती का शुचितर
जो रक्त गिरा है रक्त-बीज वह बन जाए,
भारत माता
गांधी से बेटे
उपजाए !

यह संत, सिद्ध, सूरमा जन्माती आई है,
समयानुकूल इसने विभूति बिखराई है,
यह परंपरा अपनी प्रसिद्ध क्या बदलेगी,
यह भावी के
नेताओं को भी
उगलेगी।

उर्वरता, देखो, इस पृथ्वी की घटे नहीं,
इस परंपरा का बिरवा सूखे, कटे नहीं,
दुनिया बैठेगी एक दिवस इसके नीचे,
आओ, इसको
सब रक्त-पसीने
से सींचें।

६६

उनके प्रभाव से हृदय-हृदय था अनुरंजित,

फिर भी वे थे काया-बंधन से परिसीमित,

दिल्ली में थे तो था उनसे वर्धा वंचित,

कातिल से उनका वध न हुआ, बंधन टूटा,

अब वे विमुक्त

हो आज कहाँ

मौजूद नहीं।

हम खोए थे उनके वस्त्रों-व्यवहारों में,
हम खोए थे उनके मुट्ठी भर हाड़ों में,
उनकी तकली, उनके चर्खे के तारों में
उनके प्रति अब ऊपर का आकर्षण छूटा,
अब समझेंगी
उनके मन का
मंतव्य मही।

जिस जगह मनुज सच्चाई पर अड़ जाएगा,
जिस जगह मनुज आत्मा को नहीं झुकाएगा,
गिर जाएगा पर कभी न हाथ उठाएगा,
अपने हत्यारे की भी कुशल मनाएगा,
हो जाएँगे
गांधी बाबा
बस प्रकट वहीं।

१००

आधुनिक जगत की स्पर्धापूर्ण नुमाइश में
हैं आज दिखावे पर मानवता की क़िस्में,
है भरा हुआ आँखों में कौतूहल-विस्मय,
देखें इनमें
कहलाया जाता
कौन मीर?

दुनिया के तानाशाहों का सर्वोच्च शिखर,
यह फ्रैंको, टोजो, मसोलिनी पर हर हिटलर,
यह रूज़वेल्ट, यह ट्रूमन, जिसकी चेष्टा पर
हीरोशीमा, नागासाकी पर ढहा क़हर,
यह है चियांग, जापान गर्व को मर्दित कर
जो अर्द्ध चीन के साथ आज करता संगर,
यह भीमकाय चर्चिल है जिसको लगी फ़िकर,
इँगलिस्तानी साम्राज्य रहा है बिगड़-बिखर,
यह अफ़्रीक़ा का स्मट्स ख़बर है जिस नहीं,
क्या होता, गोरे-काले चमड़े के अंदर,
यह स्टलिनग्राड
का स्टलिन लौह का
ठोस वीर।

जग के इस महाप्रदर्शन में नम्रता सहित
सपूर्ण सभ्यता भारतीय सारी संस्कृति
के युग-युग की साधना-तपस्या की परिणति,
हम में जो कुछ सर्वोत्तम है उसका प्रतिनिधि—
हम लाए हैं
अपना बूढ़ा,
नंगा फ़क़ीर।

१०१

बापू के बलिदानी शव पर

नेता, लायक,

जन के नायक,

लेखक, गायक

बहा-बहाकर अपने आँसू,

दे श्रद्धांजलि

चले गए हैं,

दुनिया में हैं काम और भी तो करने को

बापू के बलिदानी शव पर
एक आह पर,
एक अश्रु पर,
एक मगर स्वर
थमी नहीं है,
सूख न पाया,
चुप न सका हो,
यह किसका स्वर, किसका आँसू, किसकी आहें?

बापू के बलिदानी शव पर
सिसक-सिसककर
बिलख-बिलखकर
कौन गलाती
अपना अंतर?
यह भारत की
आत्मा शाश्वत,
हा मर्माहत,
रघुपति, राघव, राजा राम इसे दो धीरज

१०२

हम गांधी की प्रतिमा के इतने पास खड़े

हम देख नहीं पाते सत्ता उनकी महान,

उनकी आभा से आँखें होती चकाचौंध,

गुण-वर्णन में

साबित होती

गूँगी ज़बान।

वे भावी मानवता के हैं आदर्श एक,

असमर्थ समझने में है उनको वर्तमान,

धर्म सच्चाई और अहिंसा की प्रतिमा,

यह जाती दुनिया

से होकर

लोहू लुहान !

जो सत्यं, शिव, शुभ, सुंदर, शुचितर होता है
दुनिया रहती है उसके प्रति अंधी अजान,
वह उसे देखती, उसके प्रति नतशिर होती
जब कोई कवि
करता उसको
आँखें प्रदान

जिन आँखों से तुलसी ने राघव को देखा
जिस अंतर्दृग से सूरदास ने कान्हा को,
कोई भविष्य कवि गांधी को भी देखेगा,
दर्शाएगा भी
उनकी सत्ता
दुनिया को।

भारत का गांधी व्यक्त नहीं तब तक होगा
भारती नहीं जब तक देती गांधी अपना,
जब वाणी का मेधावी कोई उतरेगा,
तब उतरेगा
पृथ्वी पर गांधी
का सपना।

जायसी, कबीरा, सूरदास, मीरा, तुलसी,
मैथिली, निराला, पंत, प्रसाद, महादेवी,
ग़ालिबोमीर, दर्दोनज़ीर, हाली, अकबर,
इक़बाल, जोश, चकबस्त, फ़िराक़, जिगर, साग़र
की भाषा निश्चय वरद पुत्र उपजाएगी
जिसके तप तेजस्वी-ओजस्वी वचनों में
मेरी भविष्य
वाणी सच्ची
हो जाएगी।

१०२

बापू की पावन छाती से जो ख़ून बहा,
यह ग़लत, उसे कपड़े-मिट्टी ने सोख लिया,
जड़ मिट्टी-कपड़े मे है इतनी शक्ति कहाँ,
बापू का तेजस-
पुंज रक्त
बर्दाश्त करे !

वह बापू के सीने से बाहर आते ही
अति प्रबल, क्षिप्र विद्युत्-धारा मे परिवर्तित
हो, पैठ गया हर भारतवासी के तन में,
कोई जिसकी
रग में उनका
रक्त नही !

मै सोच रहा था अब तक बात मनुष्यों की,
मेरी काली सतरों में लाली-सी झलकी,
क्या आज लेखनी को भी मेरी कलुष-मुखी
बापू के कण भर
लोहू का
वरदान मिला !

१०४

उस परम हंस के घायल होकर गिरते ही
शत-शत कलमों-कंठों से बरबस निकल-निकल
शत-शत प्रबंध, कविताओं ने नभ गूँज दिया,
जैसे सहसा
चीत्कार कर उठी
सरस्वती।

मैं एक-एक लेखक के प्रति आभारी हूँ,
मैं एक-एक कवि के प्रति हूँ साभार झुका,
जिसकी रोई लेखनी निधन पर बापू के,
जिसका क्रंदन
स्वर-शब्दों में
साकार हुआ।

अपने कवित्व या जोड़-जोड़ अक्षर धरने
की क्षमता का भी आज ऋणी हूँ मैं भारी,
मेरे दुख-सुख में काम सदा वह आई है,
पर कभी नहीं
इतनी जितनी
इस अवसर पर।

यदि वाणी का आधार न मुझको मिल पाता,
तब महाशोक, वेदना, व्यथा के सागर से,
तब महापाप, अनुताप, शाप की भँवरों से,
जिसमें इस घटना ने था मुझे ढकेल दिया,
मैं समझ नहीं
पाता कैसे
ऊपर आता।

१०५

तुम महा साधना, जग कुवासना में विलीन,
तुम महा तपस्या, जग छल-छिद्रों से मलीन,
तुम महा मुक्त, जग सौ-सौ बंधन के अधीन,
वह रहा तुम्हारी
सत्ता से सब दिन
अजान।

तुम महा व्रती, कब सके कर्म का पिंड छोड़,
तुम महा यती, कब सके फलों से चित्त जोड़,
था महा कृती जब मिली तुम्हारी कृपा कोर,
अब जगा पाप,
कर गए विश्व से तुम
प्रयाण।

तुम महाप्राण, मैं लघु-लघु साँसों में सीमित,
तुम महामनुज, मैं कुटुँब-कबीले तक परिमित,
तुम महाकाव्य के महोदात्त नायक निश्चित,
मैं करूँ गीत से
कैसे श्रद्धांजलि
प्रदान।

१०६

यह समय नहीं है गाने, गान सुनाने का,
यह शोक-शर्म से अपना शीश झुकाने का,
पर, हाय कलेजा फटता है चुप रहने से,
इस विषम घड़ी
में जी कैसे
धीरज पाए।

कितने ही उनकी सुना रहे हैं गुण-गाथा,
कुछ कहे बिना मुझसे भी नहीं रहा जाता,
उनमें मेरे भी टूटे-फूटे छंद मिलें,
बापू के प्रति
जो गीत जा रहे
हैं गाए।

श्रद्धांजलि उनके चरणों में मैं क्या दूँगा,
इसको ही अपनी चरम सफलता समझूँगा,
यदि मेरे अस्फुट शब्द, विचारों, भावों में
कुछ ठेस-क्लेश
भारत का, वाणी
पा जाए।

१०७

वन गमन समय मुनियों का वेश बनाए,
जब सीतापति गंगा तट पर थे आए,
केवट ने उनको थे यह वचन सुनाए—
'हैं एक तरह के हम दोनों व्यवसायी,
तुम भवसागर,
मैं सरि से
पार लगाता।'

थे कहाँ राम-भगवान, कहाँ था केवट,
था भक्ति-भावना से ऊभा-चूभा घट,
निकले थे बैना प्रेम-लपेटे' अटपट,
(शब्दों ने नापी कब दिल की गहराई ?)
मैं उसी मनस्थिति
में अपने को
पाता।

बापू तुमने बीनी भारत की किस्मत,
भारती-तार-ताने-भरनी में मैं रत,
तुम देश-पिता, मैं देश-पुत्र—सच्चा ही,
व्यापार साम्य से यह कहने की हिम्मत—
तुममें-मुझमें
कुछ और निकट का
नाता!

१०८

कुछ नहीं हमारे शब्द, छंद में, रागों में,
हे बापू, जो हो योग्य तुम्हारे चरणों के,
पर कंठों को कैसे हम रूँधे रक्खें जब
करते अंतर
उद्वेलित आहों
के झोंके।

जिस क्षण से तुम मानवता पर बलिदान हुए,
भावों का और विचारों का बाना-ताना
फैलने लगा दिन-रात हमारे मानस पर,
तैयार हुआ
जिससे यह वाणी
का बाना।

यह बाणी की खादी ही कट-छँटकर आई
इन पद्यों के निर्गंध प्रसूनों, कलियों में,
बापू, जो अर्पित होतीं तुमको दिशि-दिशि से
लो मिला इन्हें
भी उन शत
श्रद्धांजलियों में।
